सत्यमेव जयते

ज्ञानवार्ता

सातवां संस्करण | अंक : 7 | वर्ष : 2016

MANSAR

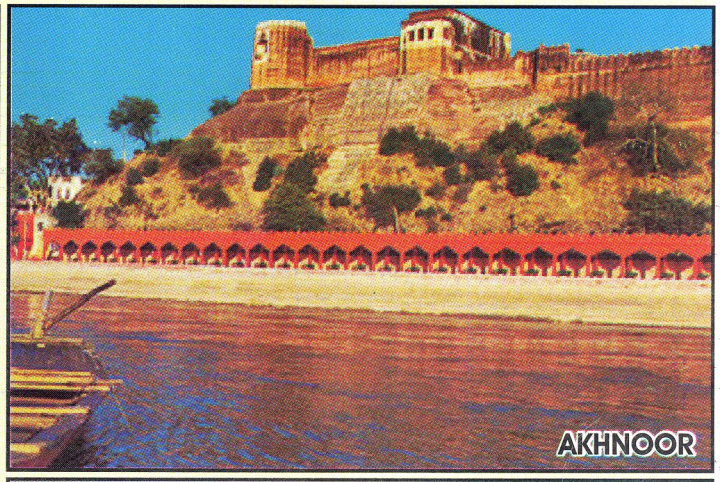
AKHNOOR

DANSAL

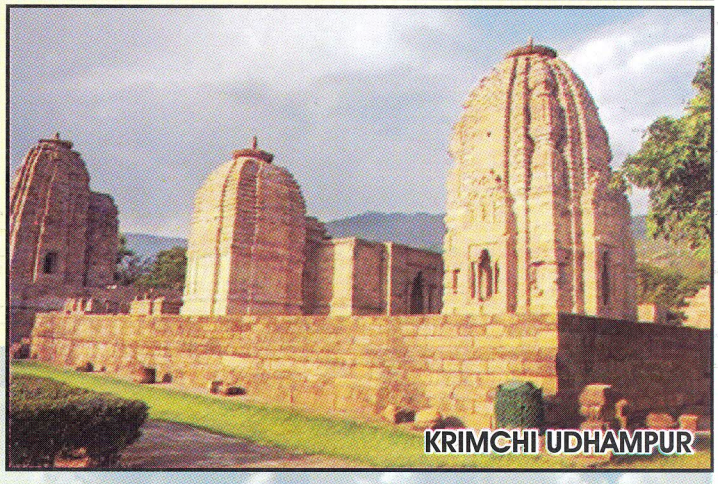
KRIMCHI UDHAMPUR

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

30 जून 2016 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू की अर्द्धवार्षिक बैठक की गतिविधियाँ

अध्यक्षीय उद्‌बोधन .....

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं निदेशक,
सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू की वार्षिक राजभाषा गृह पत्रिका **'ज्ञानवार्ता'** के सातवें अंक के प्रकाशन पर मैं अत्यन्त हर्षित हो रहा हूं। सभी को मंगलकामनाएं ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास में अनवरत गति प्राप्त कर रही है - यह हर्ष का विषय है। हिन्दी को पूर्णतया प्रयोग में लाने हेतु हमारे प्रयास केन्द्रित हैं। हमें आपके सहयोग की अपेक्षा है। राजभाषा हिदी में व्यापक क्रियान्वयन तथा प्रचार-प्रसार की दिशा में ज्ञानवार्ता का प्रकाशन एक प्रशंसनीय प्रयास है। पत्रिकाएं सदैव सार्थक भूमिका निर्वह्न करती हैं। ज्ञानवार्ता भी निरंतर प्रवाहमान रहने की दिशा में अग्रसर है।

हमारा राष्ट्र विविध भाषा-भाषी देश है। प्रत्येक प्रदेश की भाषा भिन्न है। प्रत्येक प्रदेश की संस्कृति भिन्न है। इन भिन्नताओं को एक सूत्र में पिरोने वाली हिन्दी भाषा अत्यन्त समृद्ध एवं सशक्त है जो स्वयं में एक दुर्लभ वैज्ञानिकता समेटे हुए है। अपनी क्षेत्रीय भाषओं को आत्मसात करने वाली हिन्दी भाषा सरल एवं समृद्ध होने से सम्पन्न हुई है।

हिन्दी का कार्य तकनीकी दृष्टि से सम्पन्न हो - आज इसकी महती आवश्यकता है। जम्मू नगर समिति की वेबसाइट www.tolicjammu.org पर इस समिति की कार्यान्वयन सम्बन्धी उपलब्धियां इसका प्रमाण है तथा पत्राचार पर्याप्त रूप से ई-मेल द्वारा भी किया जा रहा है।

ज्ञानवार्ता में लेखकों/रचनाकारों की लेखन शैली, कला एवं साहित्यिक अभिरुचि को निखार देना भी इस का प्रयोजन है। सभी सदस्य कार्यालयों के विभाग प्रमुखों से आग्रह है कि हम सभी अपनी गृह पत्रिका के उच्च मानक को बनाए रखें और गृह पत्रिका के क्षेत्र में भी उपलब्धियां प्राप्त करें ताकि हमारी समिति को क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार मिलें। नराकास (कार्यालय), जम्मू के सचिव डॉ. रमा शर्मा ने राजभाषा के क्रियान्वयन में सक्रिय समन्वय की महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वह्न किया है। नराकास के अध्यक्ष के नाते उनके समर्पण एवं सक्रिय सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद एवं बधाई देता हूं।

राम विश्वकर्मा

(डॉ. राम विश्वकर्मा)

संपादकीय....

डॉ. रमा शर्मा
सदस्य-सचिव, नराकास, जम्मू

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू की वार्षिक गृह पत्रिका का सातवां अंक प्रबुद्ध पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है। वास्तव में पत्रिका के सम्पादक और पाठकों में एक अबूझ रिश्ता स्थापित हो जाता है जो अनयास ही दूसरी ओर से प्रतीक्षा अनुभूत करवाता रहता है। निरत रहने की यह प्रक्रिया अनवरत सक्रिय करती चलती है।

नराकास सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों द्वारा ज्ञानवार्ता के इस अंक में महत्वपूर्ण लेखों/रचनाओं को स्थान दिया गया है। हमारे सभी सदस्य कार्यालय जिनमें केन्द्र सरकार के कार्यालय, उपक्रम/निगम एवं बैंक शामिल हैं। ये सभी एक साथ समिति को प्रगति पथ पर ले जाने में सक्रिय भागीदारी दे रहे हैं इन्हीं के सौजन्य से यह संग्रह आप को प्रस्तुत किया गया है।

अभिनव प्रयोगों द्वारा, विभिन्न कार्यक्रमों/आयोजनों से हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में यह समिति जम्मू नगर में राजभाषा के वर्चस्व में श्रीवृद्धि कर रही है।

प्रत्येक भाषा का सांस्कृतिक महत्व होता है संस्कृतियां सदैव जीवन का साथ देती हैं, जीवन का क्षरण रोकती हैं जीवन को बेहतर बनाती है भाषा तो संस्कृति के आवरण में छिपी रहती है। संस्कृति के कारण ही मनुष्य के भीतर मनुष्यता कायम रहती है। भारतीय संस्कृति भी हमेशा से भाषा का सबसे बड़ा रूप रही है तथा हमारा एक-एक शब्द हमारी संस्कृति का द्योतक करता है उसे अर्थाभिव्यक्ति प्रदान करता है।

अन्त में, प्रबुद्ध पाठकों से मेरा आग्रह रहेगा कि हमें अपने सुझाव भेजकर कृतार्थ करें। रचनाकारों के सहयोग के लिए आभार एवं भविष्य में इसी प्रकार के सहयोग की अपेक्षा करती हूं। अध्यक्ष महोदय के कुशल नेतृत्व, लेखों के चयन, संशोधन एवं गुणता प्रदान करने वाले संपादक मंडल के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए मैं अपने टंकण सहयोगी श्री राजेश कुमार का भी धन्यवाद करती हूं।

रमा शर्मा
(डॉ. रमा शर्मा)

वर्ष : नवम्बर, 2016 अंक : सातवां वार्षिक गृह पत्रिका

संरक्षक

डॉ. राम विश्वकर्मा
निदेशक आइ.आइ.आइ.एम. व
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

प्रधान संपादक

डॉ. रमा शर्मा
हिन्दी अधिकारी एवं सचिव,
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

संपादक मंडल

1. श्री अब्दुल रहीम
2. श्री पंकज बहादुर
3. श्री जगदीश लाल
4. श्री जॉनसन गिल
5. श्री वीरेन्द्र सिंह
6. श्री फूल सिंह

सहयोग

श्री राजेश कुमार (कंप्यूटर / हिन्दी टंकक)

नोट:

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखको के हैं। नराकास जम्मू व संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संयोजक संपर्कसूत्र : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू
सी.एस.आई.आर.–भारतीय समवेत औषध संस्थान
(वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्)
नहर मार्ग, जम्मू तवी–180 001 (भारत)
दूरभाष : 0191–2585006–13 फैक्स : 0191–2586333
E-mail : ramasharma@iiim.ac.in; website : www.tolicjammu.org
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

अनुक्रमणिका

क्र.	नाम	लेखक / लेखिका	पृष्ठ
1	आयुर्वेदिक औषधियों का जैवसक्रिय महत्व	डॉ. रमा शर्मा	1
2	कश्मीर हिमालय में गुरेज घाटी की जैव विविधताः एक परिचय	डॉ. बिक्रमा सिंह	8
3	आनुवांशिक द्वारा पादपों में चिकित्सकीय प्रोटीनों का उत्पादन	प्रशान्त मिश्रा	12
4.	मासूम बच्ची (कहानी)	नरेश कुमार 'उदास'	16
5	भीष्म साहनी का साहित्य चिंतन के विविध आयामों का द्योतक	रवि कुमार	20
6.	हिन्दी उपन्यासों में सांप्रदायिकता की आग में झुलसता जन–जीवन	मुक्ति शर्मा	22
7	हिन्दी भाषा की स्थिति और हमारी जिम्मेदारी	स्वाति चढ्ढा	24
8	जनरल जोरावर सिंह–शौर्य गाथा	कुलदीप कुमार शर्मा	27
9	कियां जाना पछानुएं कोल	डॉ. रमा शर्मा	31
10	विस्थापन का दर्द	राजेन्द्र कुमार च्रोंगू	34
11	आतंकवाद पर हमला	जॉनसन गिल	35
12	योग और मानव जीवन	डॉ. रमा शर्मा	36
13	व्यापार में हिन्दी का योगदान	जॉनसन गिल	38
14	वैदिक नारी के विविध रूप	डॉ. प्रतिभा	42
15	जननी व जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान	रूपाली समोत्रा	46

''आयुर्वेदिक औषधियों का जैवसक्रिय महत्व''

काल अनादि-अन्नत निरंतर प्रवाहमान सत्तारूप है। इसी प्रकार आकाश भी अनादि-अनन्त है। काल और आकाश के गर्भ में अनन्त सृष्टियां हो चुकी हैं जिनका लेखा-जोखा असम्भव है। वैज्ञानिक जन वर्तमान में भी अनन्त सृष्टियों की कल्पना करते हैं। प्रत्येक सृष्टि को एक-एक ब्रह्माण्ड के अन्तर्गत समाविष्ट माना जाता है। प्रत्येक ब्रहमाण्ड के केन्द्र में उसका अधिविष्ट एक सूर्य होता है। इन सारे ब्रहमाण्डों के मूल में परमशक्ति की कल्पना की जाती है।[1]

इस पृथ्वी के समस्त जीवों के शरीर और निर्जीव पदार्थ महाभूतों द्वारा निर्मित हैं। प्रत्येक पदार्थ में पांचों महाभूत होते हैं, किन्तु जिस महाभूत की जिसमें अधिकता होती है, उसी के अनुसार उस वस्तु का वर्गीकरण कर दिया जाता है। यथा-पार्थिव, जलीय, आग्येय, वायवीय एवं आकाशीय, परन्तु कोई भी वस्तु विशुद्ध एक ही महाभूत की नहीं होती प्रत्येक वस्तु में जो उपादान अथवा भार होता है-वह पृथ्वीतत्त्व का, तापक्रम अग्नितत्त्व का, अणुओं को परस्पर संयुक्त रखना जलतत्त्व का, अणुओं में गति वायुतत्तव का तथा अणुओं के बीच अवकाश आकाशतत्त्व का प्रतीक है।

वैदिक काल में भी लोक जीवन वनस्पतिमय था। वन्य प्रदेशों में वनस्पतियों का बाहुल्य होने के कारण प्रकृति के वरदान स्वरूप उत्पन्न जड़ी-बूटियों का प्रयोग मनुष्य अपनी दैनन्दिन आवश्यकताओं की पूर्ति उसी के माध्यम से करता था। दन्तधावन से आहार तक तथा शय्या से लेकर रथ तक सभी में वनस्पतियों का ही प्रयोग होता था। आहार तथा अन्य लौकिक उपयोग के अतिरिक्त औषधि-वनस्पति का औषधरूप में प्रयोग महत्वपूर्ण था। जबसे मनुष्य ने शरीर धारण किया, रोगों का प्रादुर्भाव हुआ तभी से इस विघ्न के निराकरण के लिए औषध का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए कुछ विशेष स्वास्थ्य नियमों के अतिरिक्त औषध विज्ञान की भी आवश्यकता होती है। रोगों के आने में वायुमंडल का प्रदूषण, जीवाणु संक्रमण आदि कुछ ऐसे तथ्य हैं जो रोगों के जनक हो जाते हैं। इसीलिए प्रकृति ने अपाय के साथ उपाय भी प्राणियों के भले के लिए ही रखे हैं। वृश्चिक लता डंक मारती है तो बिच्छु के डंक के समान ही पीड़ादायक होती है। परन्तु उस बेल के साथ अमृतबेल भी होती है जिसके पत्ते कुचलकर लगाने से पीड़ा से तुरन्त मुक्ति मिल जाती है। गर्मी आरम्भ होने के साथ मच्छर और दूसरी ओर तुलसी के पत्ते आने लग जाते हैं। उन पत्तों का रस लगाने से जलन तुरन्त शान्त हो जाती है क्योंकि तुलसी के रस में मच्छर के विषाणुओं को तुरन्त नष्ट करने की क्षमता होती है। गेंदे के पत्तों का रस त्वचा की किसी असाध्यता पर तुरन्त प्रभाव डालता है और उसे दूर कर देता है। यह किसी अंग के कट जाने की

1. इयं विसृष्टिर्यत आबभूत यदि वा दधे यदि वा न वेद।
यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्त्यो अड्.ग वेद यदि वा न वेद।।... ऋ. 10/129/7

स्थिति में रक्त का बहना भी रोक देता है।

लक्ष्मण पर विषैले शस्त्र का प्रहार हुआ और उनके शरीर में बड़ी तीव्रता से विष फैल रहा था। ऐसे में हनुमान जी द्वारा हिमालय से लाई गई संजीवनी बूटी के प्रभाव से न केवल उनका शरीर विषमुक्त हुआ अपितु घाव भी तीव्रता से भर गया। इस प्रकार की शक्तिशाली बुटियों को अन्वेषित कर कुमारिका, जोकि कई रोगों को नष्ट करने वाली औषधि है, का वर्णन अथर्ववेद में है। अथर्ववेद के अनुसार उक्त औषधि हिमालय की उपत्यकाओं में मिलती है। अवांतर काल में इस बूटी को अन्यत्र उगाने के सफल प्रयास किए गए कि आज यह बूटी न केवल औषधि रूप में प्रयुक्त होती है अथवा सजावटी पादपों के रूप में गमलों में शोभा पाती है। इस बूटी में कैंसर जैसे घातक रोग को नष्ट करने के गुण हैं। कुमारिका के साथ ही बथुआ, शलजम, चुकंदर, पत्तागोभी और खट्टे अनार में भी कैंसर से लड़ने की शक्ति है। इन सब पर शोध करके निश्चित् रूप से इस रोग के नष्ट करने की प्रभावी औषधि तैयार हो सकती है।

सम्पूर्ण ज्ञान के मूल वेदों में आयुर्वेद को जो कि अथर्ववेद का उपवेद है 'जीवन का ज्ञान' माना है अथवा जिस शास्त्र के ज्ञान से निरोग आयु प्राप्त की जा सकती है उसे आयुर्वेद कहते हैं और व्यक्तियों के विभिन्न अवस्थाओं के अनुकूल ओषधियों के सेवन द्वारा स्वास्थ्य बनाए रखना आयुर्वेद का लक्ष्य है। संस्कृत साहित्य में पादपीय औषधों द्वारा रोगों की सफल चिकित्सा का वर्णन है तथा अकेले अथर्ववेद में दो सौ इक्यानवे ओषधीय गुणों से युक्त वृक्षों तथा पौधों का वर्णन है। आयुर्वेद के अनुसार कोई ऐसी वनस्पति नहीं है जिसे विधि के अनुसार तैयार करके उपयोगी न बनाया जा सके। विषैली वनस्पतियों का भी विष समाप्त करके और उसे उचित विधि से तैयार करके असाध्य रोगों से मुक्ति पाई जा सकती है। ऐसी-ऐसी चमत्कारिक औषधियों का वर्णन है जिनसे वृद्धावस्था में भी पुनः तारुण्य की प्राप्ति की जा सकती है। महर्षि च्यवन ने च्यवनप्राश का आविष्कार किया, सेवन किया और वृद्धावस्था में पुनः यौवन प्राप्त किया। इसी प्रकार महर्षि अगस्त्य ने भी वृद्धावस्था में रसायनविशेष के उपयोग द्वारा पुनः तारूण्य प्राप्त कर लोपामुद्रा में विवाह किया और वंशवृद्धि की थी। महारानी कैकेयी ने महाराज दशरथ के हाथ का कैंसर एक विशेष औषध तैयार करके दूर कर दिया था। वास्तव में असाध्य समझे जाने वाले कैंसर तथा क्षय जैसे रोग आयुवैदिक जड़ी-बूटियों के अनुसंधान द्वारा तैयार की गई चिकित्सा से सुसाध्य हो सकते हैं।

आयुर्वेद अमृततुल्य है- जिस प्रकार अमृत से सब रोगों की शान्ति होती है और शरीर अजर-अमर बन जाता है, उसी प्रकार आयुर्वेद से सब रोग नष्ट होते हैं। चरक संहिता में भी कहा गया है- ''आयुर्वेदोऽमृतानाम्''। आयुर्वेद की इतिहास पर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि भारत में प्राचीनकाल से ही आयुर्वेद अत्यंत विकसित अवस्था में था। वेदों की अनेक शाखाओं के अध्ययन में आयुर्वेद संबंधी विचार पाए जाते हैं आयुर्वेद के अष्टांगों में प्राकृतिक उत्पादों से स्वास्थ्य रक्षा की प्राचीनतम परम्परा में स्वास्थ्यकारी पादपीय योगों का उल्लेख औषधि कह कर किया जाता था। अतएव - ऐसे पादपीय योग जो शरीर को रोगमुक्त करते हैं - ओषधीय पादप कहलाते हैं।

ओषधियों से रोगोपचार के अतिरिक्त वनस्पति ज्ञान में दक्ष महर्षि वनस्पतिजगत् की ओर सहज ही आकृष्ट थे जिससे पशु-पक्षी भी रुग्णावस्था में लाभ उठाते थे। ज्ञानपूर्वक ओषधियों का जो प्रयोग करता था वही योग्य भिषक माना जाता था। प्रयोगभेद से ओषधियां चार प्रकार की मानी जाती थीं आर्थविणी, आंगिरसी, दैवी और मनुष्यजा। शांति पौष्टिक कर्मो में उपयुक्त ओषधियां आथर्वणी कहलाती थीं। उच्चटन मारण आदि घोर कृत्यों में प्रयुक्त औषधियां आंगिरसी थीं, देवों के समान अजर-अमर बनाने वाले रसायन आदि औषध प्रयोग दैवी तथा सामान्यत: रोगनिवारणार्थ प्रयुक्त मनुष्यजा औषधि कहलाती थीं।[2]

अर्थवेदीय औषधिविज्ञान पर्याप्त उन्नत है जो दीर्घकालीन अनुभव एवं प्रयोग का परिणाम है। शौनकीय संहिता औषधियों के सौम्य स्वरूप का संकेत करती है।[3] शतपथ ब्राह्मण में भी अनेक स्थलों पर औषधियों में जल की स्थिति का निर्देश हुआ है।[4] वेदों में कई स्थलों पर औषधियों में चेतना की उपस्थिति का भी निर्देश उपलब्ध होता है। अत: प्राचीन औषध विज्ञान अत्यन्त समृद्ध था। आयुर्वेद में वर्णित कुछ प्रमुख औषधियों का वर्णन इस प्रकार है:-

(1) चीपुद्रु (2) पुतुद्रु (3) अमृता (4) अगुरु (5) कर्पूर (6) अम्लवेतस (7) नागरमोथा (8) मुलहट्ठी (9) काकड़ा (10) श्रड.गी (11) दालचीनी (12) तेजपात (13) नागकेशर (14) मंजिष्ठा (15) हल्दी (16) अफीम (17) नागशुण्डी (18) नागदन्ती (19) यवक्षार (20) नीम (21) पुण्डरीक (22) कमल (23) आमला (24) हरड़ (25) बेहड़ा (26) गुग्गलू (27) ब्राह्मी (28) अपामार (29) जलपीपर (30) अश्वगंधा (31) भंगृराज (32) वरणा (33) सुरपंख (34) पिप्पली (35) शंखपुष्पी (36) शताह्वा (सौफ) मिश्रेया (सोया) इत्यादि। इसी तरह अदरक, लहसुन, हल्दी, बेल, ज़ीरा, अजवायन आदि अनेक तरह की वनस्पतियां भारतीय जीवन का अभिन्न अंग हैं। मेथी, ज़ीरा, धनिया, पुदीना, हींग, लौंग, इलायची, जावित्री आदि वानस्पतिक पादपों का गहन विश्लेषण करें तो पाएंगे इनमें प्राय: कई उपचारक एवं निवारक एण्टीबायटिक, एन्टीएलर्जिक, एन्टीपायरेटिक, आमाशय रोग निवारक वातपित्तकफ नाशक घटक विद्यमान रहते हैं। स्वास्थ्य वैज्ञानिक इन सभी पादपों पर विस्तृत एवं गहन अध्ययन तथा शोध करें तो उपयोगी रसायन तैयार किए जा सकते हैं।

अन्य जीवों की भांति पादप भी कोशिकानिर्मित है। मूलत: रसायन ही इन कोशिकाओं का आधार होते हैं। कोशिकाओं के रासायनिक तत्वों से ही अन्य विभिन्न रसायनों का निर्माण सम्भव हो पाता है जो पादपीय जीवन और विकास में आवश्यक होते हैं। अत: पादपों को रसायनों का संरक्षक माना जाना उचित ही है। भिन्न जलवायु वाले प्रदेशों में पैदा होने वाले अनेक पादपों में रासायनिक योगों की भिन्नता स्वाभाविक है। ये पादप सहस्रों रसायनों का स्रोत हैं। मानव को सदैव इन रसायनों ने आकर्षित किया है और वह इन का प्रयोग विभिन्न रूपों में करता आ रहा है जैसे- रंगाई,

2. आथर्वणीराङ्गि.रसीर्दैवीर्मनुष्यजा उता ओषधय: प्रजायन्ते सदा त्वं प्राण जिन्वसि।। शौनकीय संहिता 11/416
3. 'ययस्वतीरोषधय:'-- शौ. 18/13/56
4. आपोहि एतासां रस: शतपथ ब्राह्मण - 1/22/2, 3/6/1/7

कीटनाशक, सुगंध एवं औषधि इत्यादि। रत्नजोत से लाल रंग, भारतीय स्याही से काला रंग जैसे प्रयोग सर्वविदित हैं। गुलाब, लेवेण्डर इत्यादि का प्रयोग मनुष्य को प्रफुल्लित एवं आनन्दित रखने के लिए उत्तम है। चाय, कॉफी, चरस, गांजा एवं अफीम इत्यादि नशीले पदार्थ भी पादपों से प्राप्त होते हैं और इन्हें दवा रूप में भी प्रयोग किया जाता रहा है। रंगाई इत्यादि कार्य में टेक्स्टाइल एवं खाद्य उद्योगों में भी इनके उत्पाद प्रयुक्त होते हैं।

जनोपयोगी जैवसक्रिय पदार्थ युक्त कुछ महत्वपूर्ण औषधीय एवं सगंध पादप इस प्रकार हैं जो आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से हितकारी हैं:-

1. **अश्वगंधा:-** विधानिया सोम्नीफेरा (अश्वगंधा) 'सोलेनेसी' कुल का पादप है जिसे साधारणतया अश्वगंधा कहा जाता है। इसकी जड़ों का प्रयोग प्राचीन काल से ही औषधि रूप में होता आ रहा है। राजनिघण्टु में उल्लिखित "अश्वगंधा कटूष्णा स्यात्तिक्ता, च मदगन्धिका वल्या वातहरा हन्ति का सश्वासक्षयव्रणान्।।[5] अर्थात् अश्वगंधा कटुरसयुक्त, कषायरस तथा उष्णवीर्य है। यह मदगन्धी है और बलकारक वातनाशक, कास, श्वास, क्षयरोग तथा व्रण को नाश करती है। आधुनिक अन्वेषण से भी इसकी जड़ों में अनेक ओषधीय गुण होने का प्रमाण मिला है। इस का पौधा छोटा, तना रोएंदार, पत्ते हल्के हरे तथा जड़ मोटी होती है। इसकी जड़ों को गठिया, पक्षाघात और रक्तचाप आदि रोगों में उपचार हेतु प्रयोग किया जाता है। आधुनिक चिकित्सा प्रणाली में इसे कैंसर रोग में लाभप्रद माना गया है। शरीर को सशक्त बनाने तथा विभिन्न प्रकार के स्नायु संबंधी रोगों में भी उत्तम समझा जाता है। इस की पत्तियां भी त्वचा रोगों, सूजन तथा घावों को भरने के लिए काम में लाई जाती हैं। इसकी जड़ों में निकोटीन, सोम्नीफेरीन, सोम्नीन, विधानीन और विधानीनाइन नामक अल्कोलाइड और कई प्रकार के विधानोलाईड्ज़ पाए जाते हैं।

2. **आर्टिमिज़िया एन्नुआ:-** आर्टीमिज़िया एन्नुआ नामक विशिष्ट पादप का उपयोग प्राचीन काल से ज्वर उपचार, सुगन्ध व खरपतवार नाशक इत्यादि के रूप में किया जाता था। इस के पत्तों एवं फलों से आर्टीमिजिनिन नामक घटक प्राप्त होता है जो मलेरिया एवं सेरेब्रेल मलेरिया में अत्यन्त प्रभावकारी औषधि है। यह तत्व बिना किसी पार्श्व प्रभाव के रोग का उपचार करता है।

3. **एरगट:-** कवक परिवार में महत्वपूर्णस्थान रखने वाला वर्षो पूर्व से एक ज़हरीले पदार्थ के रूप में जाना जाता रहा था परन्तु अब यह एक विशेष औषधि के रूप में प्रयुक्त हो रहा है। प्राकृतिक रूप में आर्द्र एवं शीत प्रदेशों में सुगमता से पनपता है। एरगट और इसके विभिन्न साल्ट (लवण) अनेक रोगों में औषधरूप में प्रयोग होते हैं। वर्तमान में राई से बनी एरगट की उपयोगिता अनेक रोगों में विशेष लाभप्रद पाई गई है। यह औषधि सुगमप्रसव और रक्तचाप नियंत्रण हेतु सक्षम पाई गई है।

4. **तुलसी:-** तुलसी की अनेक प्रजातियां विश्व के उष्णीय एवं गर्म जलवायु वाले क्षेत्रों में पाई

5. राजनिघण्टु, 112

जाती हैं जिनसे सगंध तेल प्राप्त होते हैं जैसे बेसिल का तेल, कपूर, मेथाइल सिन्नामेट, अजनौ स्ट्राल आदि। तुलसी का प्रयोग पुरातन काल से ही विभिन्न प्रकार के रोगों से रक्षा हेतु होता रहा है। आई.आई.आई.एम., जम्मू ने संवर्धन क्रिया द्वारा बहुत सी प्रभेदों का निर्माण किया है जिनमें से 'क्लॉसिमम' थाइमॉसिमस और आर.आर.एल.-ओ.सी.-11 प्रमुख है। क्लॉसिमस यूजेनॉल उत्पादन का एक सस्ता साधन है। क्लॉसिमम में लिनालूल की मात्रा 70 प्रतिशत पाई गई जिसका उपयोग सेंट, फ्लेवर एवं कॉस्मेटिक्स में किया जाता है। अन्य प्रभेद थाईमॉसिमम में 'थाइमॉल' नामक रासायनिक पदार्थ पाया जाता है जो मुख्यत: अजवायन के तेल से ही मिलता है। यह प्रभेद थाइमोल का एक सस्ता स्रोत है जो पीपरोधक तथा कीटाणुनाशक है और इसका प्रयोग औषधि तथा परिमल उद्योग के अतिरिक्त मेन्थॉल में भी किया जाता है। अपने ज्वरहर गुणों के कारण इसे ज्वरपौधा भी कहा जाता है। आर.आर.एल.ओ.सी.-11 भी तुलसी की एक विशेष प्रभेद है जिसके तेल में लिनालूल नामक सुगंधित पदार्थ पाया जाता है। लिनालूल एक बहुमूल्य पदार्थ है जो सुगन्ध उद्योग में इत्रसाज़ी तथा सौन्दर्य प्रसाधन निर्माण में प्रयुक्त होता है। इसके अतिरिक्त इसे कैंडीज, केक तथा अन्य मिष्ठूनों में सुगन्ध के लिए प्रयोग किया जाता है।

5. **पोदीना:**- पोदीना अथवा मेन्था ''लैमिएसी'' वंश का पादप है तथा इसके अन्तर्गत मेंथा की कई प्रजातियां आती हैं। इन प्रजातियों में जापानी पोदीना (मेन्था अरवेंसिस) पिपरमिंट या काला पोदीना (मेन्था पिपरेटा) स्पीयरमिंट या (मेंथा स्पाईकेटा) मेन्था स्ट्रेटा या (बर्गामोंट मिंट) स्कॉच स्पीयरमिंट या (मेन्था ग्रेसिलिस्) इत्यादि प्रमुख हैं। इन प्रजातियों को सगंध पादपों की श्रेणी में रखा गया है। मेंथा की सभी प्रजातियों के उपयोग एवं पहचान बिल्कुल अलग-अलग है, क्योंकि इनमें पाये जाने वाले यथा - जापानी पोदीना में मेंथॉल, स्पीयरमिंट में कार्बोन, स्ट्रेटा में लिनालूल ऐसिटेट, पिपरमिंट में मिथाइल एसिटेट इत्यादि, दूसरी प्रजाति से अलग होते हैं इन प्रजातियों के आसवन से प्राप्त सुगंधित तेल के संसार भर में विभिन्न उत्पादों जैसे पान-मसाला, सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री, सर्दी-खांसी की दवाइयों, सुवास एवं औषधियों के निर्माण में बड़े पैमाने पर प्रयोग किया जाता रहा है।

6. **ब्राह्मी:**- अपने वानस्पतिक नाम (बैकोपा मोनराई) के नाम से जानी जाने वाली ब्राह्मी स्क्रोफुलेरिएसी कुल की शाकीय बूटी है। प्राचीन काल से इसका प्रयोग औषधियों में होता आ रहा है, जिसका वर्णन प्राचीन चिकित्सा ग्रन्थ चरक संहिता में भी है:-

''ब्राह्मीरसवचाकुष्ठशंखपुष्पीर्रभरेव च।
पुराणं घृतमुन्मालक्ष्म्यपरस्मारपापनुत् ।।[6]

अर्थात् ब्राह्मी शीतवीर्य, कषायरसविपाक में तिक्त है और वात रक्त होती है, पित्त विकार को शान्त करती है। यह बुद्धि, प्रज्ञाशक्ति एवं मेधाशक्ति को देती है तथा आयुवर्द्धक है। ब्राह्मी

6. चरक संहिता, चिंस्था., 10/25

उन्माद, अपस्मार और अन्य पापजन्य रोगों को भी नष्ट करती है। परम्परागत औषधि में ब्राह्मी का उपयोग बुद्धिवर्धक औषधि के रूप में तो किया जाता है इसके अतिरिक्त कफ विकार, वेदना पाचन संस्थान, रक्तवहन संस्थान, श्वास संस्थान, प्रजनन संस्थान, त्वचा, ज्वर आदि में भी इसका प्रयोग होता है। आधुनिक अनुसंधान में केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, लखनऊ तथा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय ने ब्राह्मी के पौधों के रासायनिक तत्वों से क्रमशः 'मेमोरी प्लॅस तथा मेगा माइन्ड' नामक औषधि का विकास किया है जो आजकल बाज़ार में उपलब्ध है। इस ओषधीय पादप में ब्राह्मी तथा हर्पेस्टिन नामक दो क्षाराभ तथा बैकोसाइड 'ए' एवं बैकोसाइड 'बी' नामक सैपोनीन पाए जाते हैं। ब्राह्मी की पत्तियों के रासायनिक विश्लेषण से पता चला है कि इसके अन्दर 93 प्रतिशत पानी, 2. 1 प्रतिशत प्रोटीन, 0.6 प्रतिशत वसा, 5.9 प्रतिशत शर्करा, 1.05 प्रतिशत तन्तु तथा 1.9 प्रतिशत राख आदि तत्व विद्यमान होते हैं। उत्तरी भारत में मण्डूकपर्णी (सेन्टेला ऐसियेटीका) को ब्राह्मी के रूप में प्रयोग किया जाता है लेकिन दक्षिण भारत तथा सर्वत्र बैकोपा मोनराई को ही असली ब्राह्मी के रूप में जाना जाता है।

7. **नागरमोथा:**- नागरमोथा साइप्रेस प्रजाति का पादप है जिसे संस्कृत में नागरमुष्ट कहते है। औषधि के रूप में नागरमोथा की गांठों का उपयोग उदर रोगों में किया जाता है। पेचिश में नागरमोथा का काढ़ा सुजाकी एवं सिम्फिलिक संक्रमण रोग दूर करने में उपयोग किया जाता है। नागरमोथा का तेल भारतीय इत्र उद्योग में काफी प्रयुक्त होता है। इसकी सगंध लकड़ी मिट्टी की सोंधी सुगंध की तरह होती है जिसका उपयोग सुगंति साबुन, तम्बाकू, अगरबत्ती आदि में उपयोग किया जाता है। राज निघण्टु में उल्लिखित ''तिक्तानाग रमुस्ता कटुः कषायां च शीतला कफनुत्। पित्तज्वरातिसारारुचि तृष्णादाह नाशनी श्रम हृत्।।'' अर्थात् नागरमोथा कटु, ज्वर, अतिसार, अरुचि, प्यास तथा दाह को शान्त करती है और थकावट को दूर करती है।

8. **सदाबहार:**- विंकारोजिया, केथोरथस रोजिया, सदाबहार बारामासी नामों से जाना जाने वाला पादप महत्वपूर्ण ओषधीयगुणों से युक्त है। यह एक जंगली पादप है जो कई स्थानों पर स्वयमेव उग जाता है। विगत कुछ वर्षो से इसकी कृषि भी की जा रही है। इसके पत्तें एवं फलों में पाए जाने वाले अल्कोलाइड से कैंसर के उपचारार्थ ओषधियां विनक्रिस्टीन एवं विन ब्लास्टिन निर्मित होती है। जड़ में पाए जाने वाले राउवसिन रसप्रिन से एंटीफाइबलिक एवं हाइपोटेसिव औषधियां बनाई जाती है। इसकी पत्ती, तना, फूल, जड़ एवं जड़ की छाल में विभिन्न मात्रा में अल्कोलाइड पाया जाता है।

9. **पायरेथ्रम:**- क्राइसेन्थेमम सिनेरेरिया फोलियम के सूखे फूलों को पायरेथ्रम कहते हैं। इन फूलों से जो पायरेथ्रिन निकलता है वह कीड़े एवं मच्छर मारने के लिए घरों में प्रयुक्त होता है इसका प्रयोग मच्छर भगाने के लिए ''मैट'' में किया जाता है। कीटनाशक के रूप में प्रसिद्ध पायरेथ्रम से पायरेथ्रिन ओलियो- रेज़िन के रूप में पेट्रोलियम सॉलवेंट जैसे कि पेट्रोलियम ईथर, एथीलीन आदि का प्रयोग करके निकाला जाता है। इस कीटनाशक की विशेषता यह है कि इसका प्रभाव मनुष्य या पशु पर नहीं होता। पायरेथ्रिन का प्रयोग पाउडर, सेंट, क्रीम एवं मल्हम के रूप में किया जाता है।

10. **निम्बूघास:**- सिम्बोपोगॉन सगंध घासों में निम्बूघास का विशिष्ट स्थान है। यह तनारहित बहुवर्षीय तेलयुक्त घास है। इस तेल का मुख्य घटक स्ट्राल होता है। स्ट्राल से आरम्भ करके एल्फा आयोनीन और बीटा-आयोनीन तैयार किए जाते हैं। बीटा आयोनीन से विटामिन ए संश्लेषित किया जाता है। स्ट्राल का प्रयोग विभिन्न प्रकार के साबुन उद्योगों में एवं सुगंधित पदार्थो के बनाने में किया जाता है। हमारे देश में इसकी खेती मुख्यतया केरल में की जाती है। निम्बूघास की पत्तियां हर्बल टी में भी प्रयोग की जाती है जो लेमन टी के नाम से बाजार में बिकती है।

11. **जामरोजा:**- सिम्बोपोगॉन नार्डस वराइटी कनफर्टीफ्लोरस प्रजाति का संकर है जो पामरोशा से अधिक तेल देता है और पामरोशा का अच्छा विकल्प है। इसमें जिरेनियाल, जिरेनियाल ऐसीटेट, लिनालूल, केरीओक्लिीन आक्साइड, स्ट्राल एवं सेसक्विटर पेनायड पाए जाते हैं। इस प्रजाति को आई.आई.आई.एम., जम्मू में विकसित किया गया है।

12. **(आर.आर.एल.-सी.एन. 5) सिम्बोपोगॉन रोशा:**- सिम्बोपोगॉन रोशा तृण जातीय सुगंधित तेल वाले कुल का पादप है। भारतवर्ष में इसकी 27 जातियां एवं उपजातियां प्राकृतिक तौर पर उग रही हैं। इसके अतिरिक्त कुछ प्रजातियां जैसे- पामरोशा, जामरोशा, जावा सिट्रोनेलाघास एवं निम्बूघास इत्यादि की व्यावसायिक कृषि भारत में की जा रही है। इनकी पत्तियों से आसवन विधि द्वारा तेल निकाला जाता है। इसके प्रमुख घटक सिट्रोनेलोल, स्ट्रिल, जिरेनियाल एवं जिरेनाइल एसिटेट हैं। इनका उपयोग साबुन में सुगंध के लिए एन्टीसेप्टिक, क्रीम, ओडोमॉस तथा सौन्दर्य प्रसाधनों में किया जाता है। आर.आर.एल. सी.एन.-5, सिम्बोपोगॉन नॉर्डस किस्म कनफर्टीफ्लोरस का प्रभेद है जो आई.आई.आई.एम., जम्मू द्वारा विकसित किया जाता है।

13. शतावरी :- शतावरी का वानस्पतिक नाम ऐस्पैरागस रेसीमोसस है। यह लिलिएसी कुल का पादप है तथा इसकी 22 प्रजातियां भारत में पाई जाती हैं। इनमें से कुछ प्रजातियां खाने, कुछ औषधि एवं कुछ सजावट के काम में लाई जाती हैं। शतावरी एक शाकीय पादप है और आयुवैदिकमतानुसार शातवरी भारी, शीतल, बुद्धिवर्धक, अग्निदीपक, पौष्टिक, नेत्रों को हितकारी, अतिसार निवारक कामोद्दीपक, स्तनों में दूध बढ़ाने वाली, बलकारक तथा वात रक्त पित्त और सूजन को दूर करने वाली है। महर्षि चरक के अनुसार शतावरी वृद्धावस्था से रक्षा करने वाली और वीर्यवर्धक है।

हमारे देश की वानस्पतिक सम्पदा यद्यपि पर्याप्त समृद्ध है तथापि जनोपयोगी वनौषधियों एवं सगंध पादपों चाहे वे वृक्ष, लताएं, गुल्म, जड़ी-बूटियां अथवा घास रूप हैं, न केवल उनके क्षरण को रोकना ही आवश्यक है अपितु उनके संवर्धन एवं समुचित रखरखाव की भी महती आवश्यकता है।

डॉ. रमा शर्मा
हिन्दी अधिकारी,
भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

कश्मीर हिमालय में गुरेज घाटी की जैव विविधता : एक परिचय

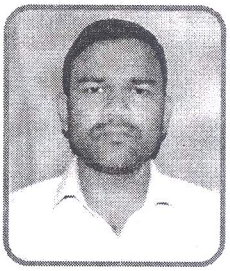

भारत में स्थित जम्मू-कश्मीर राज्य (क्षेत्र: 2,22,236 वर्ग कि.मी.) उत्तरी हिमालय का एक मुख्य हिस्सा है जो कश्मीर घाटी, तवी घाटी, चिनाव घाटी, पुंछ घाटी, सिंध घाटी और लिद्दर घाटी जैसे कई घाटियों के रूप में प्रकृतिक सुन्दरता का घर बना हुआ है। इन्हीं में से एक प्रकृति की गोद में बसा गुरेज घाटी उच्च कश्मीर हिमालय का ताज कहा जाता है जो श्रीनगर से 127 किलोमीटर तथा बांदीपुरा से लगभग 90 किलोमीटर की दूरी पर (अक्षांश: उत्तरी 34°31'34.04'' से 34°41'12.03'', देशान्तर: पूर्वी 74°36'17.61'' से 74°38'18.50'') आंतरिक उत्तरी जम्मू-कश्मीर राज्य में स्थित है। इस घाटी के रास्ते पर सबसे ऊंची चोटी 3512 मीटर ऊंचाई के बीच स्थित राजदान दर्रा है जो भारी बर्फ गिरने के कारण छ: महीने लोगों के लिए बंद रहता है। अपनी भौगोलिक सुन्दरता के साथ-साथ, प्राकृतिक सुन्दरता का नमूना गुरेज घाटी विभिन्न प्रकार की जैव विविधता से सम्पन्न है तथा अलग-अलग प्रकार की वनस्पतियों एवं जन्तुओं का आवास बना हुआ है। इस प्रकृति की अचल में दर्द, शिनास, कश्मीरी, गुजर, पठान और बकरवाल जनजाति समुदाय के लोग निवास करते है जो इस भाग को प्रकृति की अनमोल देन मानते हैं। इस घाटी में उर्दू मुख्य आधिकारिक भाषा है, हालांकि, अन्य कश्मीर घाटी में बोली जाने वाली भाषाएं जैसे डोगरी, कश्मीरी, लद्दाखी, पहाड़ी, पश्तो और शीना विख्यात हैं।

गुरेज घाटी का सबसे मुख्य विशेषता प्रसिद्ध आकर्षक हब्बा खातून चोटी है जो एक पिरामिड आकार की तरह का है और जंगली वनस्पतियों का घर बना हुआ है। यह पर्वत शिखर कश्मीरी कवयित्री हब्बा खातून के नाम पर रखा गया है। कहा जाता है कि पहले कवयित्री का विवाह हब्बा नामक एक अपनढ़ किसान से हुआ था जो हमेशा उसके साथ बुरा व्यवहार करता था क्योंकि ये हमेशा पागलों की तरह प्रकृति पर कविता करती रहती थी। किंवदती है कि कश्मीर के शासक राजा यूसुफ शाह चक हब्बा खागून के कविता और बुद्धि से मोहित हो गये थे। उन्होंने किसान से हब्बा खातून का तलाक करवाया और इनसे शादी कर ली। बाद में राजा यूसुफ शाह चक को प्रतिद्वंद्वी (सम्राट अकबर) ने कैद कर लिया था। हब्बा खातून अपने प्रेमी की तलाश में अक्सर चोटी के पास भटकती, कविता करती रहती और बाद में स्वर्ग को प्यारी हो गयी, इन्ही कथाएं पर इस पहाड़ी का नाम हब्बा खातून पहाड़ी रखा गया है।

लगभग ईस्ट वेस्ट दिशा में बहने वाली किशनगंगा नदी गुरेज घाटी के माध्यम से बहती है। पूर्वी तुलैल (Tulail) में किशनगंगा नदी पश्चिम की गुरेज घाटी के माध्यम से सिंध (Sind) से जुड़े हुए बहती है। किशनगंगा नदी का मुख्य स्रोत एक ग्लेशियर है जो इस घाटी के माध्यम से पाकिस्तान में प्रवेश करती है। सीमा के दूसरी तरफ किशनगंगा नदी नमेदास (Namedas) के नाम पर ख्याति प्राप्त है और इसी पर पाकिस्तान में नीलम घाटी नाम रखा गया है। किशनगंगा नदी प्रकृति का एक सुंदर नमुना है। नदी में ट्राउट मछलियाँ जो मछलियों की एक दुर्लभ नस्ल है किशनगंगा नदी में आसानी से पाई जाती है। सामान्य रूप से गुरेज घाटी की जलवायु शीतोष्ण है लेकिन अलग-अलग ऊंचाई के कारण काफी भिन्न है। बर्फ की पहली गिरावट ऊंचाई वाले इलाकों में पहले अक्टूबर में होता है या सर्दियों में लम्बे समय नवम्बर से अप्रैल तक

रहता है। चारों ओर से घाटी बर्फ से ढकी पहाड़ों से घिरा हुआ है। और यही कारणों से विविध प्रकार के जीव और हिमालयी भूरे भालू और हिम तेंदुआ सहित अनेकों प्रकार के वन्य जीव यहाँ पाये जाते हैं।

गुरेज घाटी मे हिमालय की ऊंचाई वाली दुर्लभ जंगली वनस्पतियां पाइ जाती है। जो अपनी औषधीय उपयोग, प्राकृतिक फूलों की कई किस्में, पत्तों या आकारागत बनावटों के लिये प्रसिद्ध हैं। हालांकि गुरेज घाटी एक दूर दराज क्षेत्र है, परन्तु यह घाटी आध्यातिमक और शारीरिक रूप से एक व्यक्ति के दौरा करने के लिए उपयोक्त स्थान हैं। यहां के लोग अपनी आवश्यकताओं के लिये पूर्णतय: प्राकृतिक संपदाओं तथा आसपास के जंगलों पर निर्भर हैं। ये अपनी दैनिक जीवन की आवश्यकताओं जैसे जलावन हेतु लकड़ी, पालतू पशु हेतु चारा, रोग हेतु औषधीय पौधे, जंगली सब्जियों एवं काष्ट आदि के लिये पायी जाने वाली वनस्पतियों पर अधिकतर निर्भर रहते हैं। वनों में और पहाड़ों पर रहने के कारण इन लोगों को आधुनिक औषधियों के बारे में अधिक जानकारी नहीं है, अत: वे छोटी-छोटी बीमारियों या महामारी के समय में औषधीय पेड़-पौधों का ही प्रयोग कर अपनी जीविका चलाते आ रहे हैं। यह क्षेत्र ऊंचाई वाली दुर्लभ पौधों के पैदावार के लिये अनुकूल स्थान होने के कारण यहाँ पर औषधीय पौधें बहुतायत से पाये जाते है जिनका उपयोग करके यहाँ के निवासी जैसे दर्द, शिनास, कश्मीरि, गुजर, पठान और बकरवाल जनजाति समुदाय के लोग अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत करते है। इसलिये इन जनजातियों के लोगों व जंगली वनस्पतियों के बीच परस्पर एक संबंध स्थापित हैं।

गुरेज घाटी में वनस्पति सर्वेक्षण:-

गुरेज घाटी में वनस्पति सर्वेक्षण का कार्य सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू द्वारा प्रगति पर है। हालांकि जम्मू-कश्मीर के वन विभाग ने कुछ सर्वेक्षण कार्य किये हैं लेकिन इस पर प्रकाशित वैज्ञानिक सामग्री उपलब्ध नहीं हैं। लेखक ने सन् 2014 से 2016 के बीच गुरेज घाटी में पादप सर्वेक्षण हेतु अनेकों वनस्पतिक यात्रायें की हैं और लगभग 1000 से अधिक पादप नमूने व एक सौ से अधिक सजीव पौधों के नमूने एकत्रित किये हैं। इनमें विभिन्न प्रकार के पहाड़ी वृक्ष, आरोही लतायें, शाक एवं अनेक प्रजातियाँ के पौधों शामिल हैं। अब तक इस घाटी में से कुल 500 वनस्पतियों की पहचान की जा चुकी हैं जिसमें विभिन्न प्रकार के औषधीय, सजावटी एवं दुर्लभ प्रजातियों के पौधे भी सम्मिलित हैं।

प्रस्तुत लेख में गुरेज घाटी में पाये जाने वाले विशेषकर कुछ महत्वपूर्ण दुर्लभ जंगली औषधीय पौधों के बारे में संक्षेप में विवरण प्रस्तुत किया जाता है।

1. एकोनाइटम हेटरोफाइलम (Aconitum heterophyllum Wall. ex Royle) {कुल: रेन्नाकुलेसी; स्थानिक नाम : पतरिक} - यह एक वार्षिक जड़ी बूटी वाला पौधा है जो 20-25 से.मी. लम्बा तक होता है जिसकी जड़े और कंद टॉनिक के रूप में प्रयोग किया जाता है।

2. एकोनाइटम लेइभे (Aconitum leave Royle) {कुल: रेन्नाकुलेसी; स्थानिक नाम : मोहन्द} - यह भी एक वार्षिक जड़ी बूटी वाला दुर्लभ जंगली औषधीय पौधा है जो 10-20 से.मी. लम्बा होता है जिसकी कंद स्थानीय दवा में इस्तेमाल किया जाता है। यह संयंत्र अत्यधिक आदत नुकसान प्रजातियों के कारण चपेट में

हैं। इसके कंद कच्चे रूप में अत्यधिक जहरीला होते हैं।

3. एक्विलेजिया फ्राग्रेनस (Aquilegia fragrans Benth) {कुल: रेन्नाकुलेसी; स्थानिक नाम : कलुम्ब} - यह वार्षिक जड़ी बूटी वाला पौधा है जिसका उपयोग स्थानीय दवा बनाने के रूप में किया जाता है ।

4. आर्निबिया बेनथामाई (Arnebia benthami I.M. Johnston) {कुल: बोराजिनेसी; स्थानिक नाम : रत्तनजोत} - यह एक वार्षिक संयंत्र प्रजाति का पौधा है जो 1 मीटर लंबा तक बढ़ता है। जीभ और गले की बीमारी में शूटिंग के फूल इस्तेमाल किया जाता है ।

5. आर्टिमिसिया एमैगढालिना (Artemisia amygdalina Decne) {कुल: एस्टरेसी ; स्थानिक नाम : वीरतिथवन } - हिमालय की बारहमासी खुश्बूदार औषधीय जड़ी बूटी प्रजाति है जो संयंत्र 1.5 मीटर लंबा और स्थानीय दवा बनाने के रूप में प्रयोग किया जाता है ।

6. एट्रोपा एकुमिनेटा (Atropa acuminate Royle) {कुल: सेलेनेसी ; स्थानिक नाम : वीसराल } - यह हिमालय में पाये जाने वाले बारहमासी ओषधीय पौधा है जिसकी तने लगभग 2 मीटर लंबा तक होता है। जड़ों गठिया के उपचार में प्रयोग किया जाता है। अधिक प्रयोग के कारण यह प्रजाति के पौधों हिमालय में अतयधिक खतरे में है ।

7. बर्बेरिस लाईसियम (Berberis lyceum Royle) {कुल: बर्बेरिडेसी ; स्थानिक नाम : कसमल } - यह उत्तरी हिमालय प्रान्तों में पाये जाने वाला बारहमासी झाड़ीयों जैसे फैला ओषधीय पौधा है जो करीब 3 मीटर तक लंबा हो जाता है। जड़ों से भूरे रंग की सामग्री निकलती है जिसे रसौन्ट कहा जाता है। रसौन्टा को ठंडा एजेंट के रूप में इस्तेमाल किया जाता है या आंखों के लोशन के रूप में प्रयोग किया जाता है ।

8. डेकटाइलोराजा हाटाजिरेया (Dactylorhiza hatagirea D.Don) {कुल: ऑर्किडेसी ; स्थानिक नाम : बोयोपूस } - हिमालय स्थानीय प्रजातियों में पायें जानेवाला अति दुर्लभ जंगली ओषधीय पौधा है जो 15-25 से.मी. लंबा होता है जिसकी कंद स्थानीय दवा बनाने में प्रयोग किया जाता है ।

9. फ्रिटिल्लारिया रोयलेई (Fritillaria roylei Hook.) {कुल: लिलियेसी; स्थानिक नाम : काकाली} - हिमालय में पाये जानेवाला फ्रिटिलरी एक जड़ी बूटी संयंत्र है जिसके तने लगभग 0.5-2 फुट लंबा होता है। आमतौर पर 2700-4000 मीटर की ऊंचाई पर पाकिस्तान से उत्तराखंडमें अल्पाइन ढलानों ओर हिमालय की झाड़ी में पाया जाता है। फूल भूरे, बैंगनी और आम तौर पर सुस्त बैंगनी के साथ पीले या हरे रंग के होते है।। इस पौधे के बल्बों का उपयोग च्यवनप्राश के निर्माण में किया जाता है।

10. हायोसॉयमस नाइजर (Hyoscyamus niger L.) {कुल: सोलेनेसी ; स्थानिक नाम : बाजारभाग } - यह एक वार्षिक झाड़ी वाला पौधा है जिससे हायोस्केमाईन्न नामक दवा पत्तियों से बनता है जिसका उपयोग अस्थमा के उपचार में किया जाता है ।

11. लेक्टुका लेस्सरटियाना (Lactuca lessertiana C.B. Clarke) {कुल: एस्टरेसी ; स्थानिक नाम : खाला } - यह एक वार्षिक संयंत्र प्रजाति का पौधा है जो 1 मीटर लंबा तक बढ़ता है। यह ओषधीय पौधा गुरेज घाटी में बहुतायत से पाये जाते है जिनका उपयोग यहॉ के निवासी जंगली सब्जी के रूप में करते हैं।

12. मोरिना लोन्गिफोलिया (Morina longifolia Wall. Ex DC.) {कुल: काप्रिफोलियेसी ; स्थानिक नाम : विशकानद्रा } - यह एक वार्षिक संयंत्र प्रजाति का औषधीय पौधा है जिसकी जड़े घावों के उपचार में उपयोग होती हैं। यह धूप व अगरब्बती बनाने में इस्तेमाल किया जाता है।

13. पिक्रोराइजा कुरोआ (Picrorhiza kurrooa Royle ex Benth.) {कुल: स्क्रॉफुलेरिएसी ; स्थानिक नाम : वीरतिथवन } - हिमालय में पाये जानेवाला कुटुकी गुरेज घाटी में बहुतायत से पाये जाते है जो यहां के लोग का मुख्य आय का एक जरिया बना हुआ हैं। इस पौधे की की जड़े भूख सुधार करने के लिए टॉनिक के रूप में प्रयोग किया जाता है ।

14. सिनोपोडोफाइलम हेक्सैन्ड्रम (Sinopodophyllum hexandrum (Royle) T.S. Ying) {कुल: पोडोफाइलेसी ; स्थानिक नाम : वनककड़ी } - हिमालय में पाये जानेवाला इस पौधे के कंद का प्रयोग कैंसर के इलाज में किया जाता है ।

15. रियम मुरक्रोफटीयानम (Rhuem moorcroftianum Royle) {कुल: पॉलीगोनेसी ; स्थानिक नाम : पम्बचलन } - यह उत्तरी हिमालय प्रान्तों में पाये जाने वाला एक जड़ी बूटी संयंत्र है जो घाव भरने या मांसपेशियों में सूजन और कण्ठमाला में इस्तेमाल किया जाता है ।

16. साल्बिया हायंस (Salvia hians Royle ex Benth.) {कुल: लैमिएसी ; स्थानिक नाम : कालिघरी } - यह हिमालय की बारहमासी खुशबूदार औषधीय जड़ी बूटी प्रजाति का पौधा है।

17. सॉसूरिया कोस्टास (Saussurea costus Lipsch) {कुल: एस्टरेसी ; स्थानिक नाम : कुथ } - इस पौधे की जड़े आयुर्वेदिक सूत्र में इस्तेमाल किया जाता हैं।

18. स्वर्शिया पिटियोलेटा (Swertia petiolata D. Don) {कुल: जेन्शियानेसी ; स्थानिक नाम : ट्रेनकि} - इस पौधे को औषधि जिगर की बीमारी में इस्तेमाल किया जाता हैं।

19. ट्रागोपोगोन डुबियास (Tragopogon dubius Scop.) {कुल: एस्टरेसी ; स्थानिक नाम : गिरगिनोक } - इस पौधे के शूटिंग को सलाद और सब्जी के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं।

20. ट्रिलियम गोभानिएइनम (Trillium govaaniana Wall ex D. Don) {कुल: मेलानथियेशी ; स्थानिक नाम : लैइडी } - इस पौधे के कंद को हाइड्रोलिसिस करने पर डाइसोजेनिन नामक पदार्थ बनता है जो एंटिडाबेटिक का काम करता हैं।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि यह ओंति की गोद में बसा गुरेज घाटी बहुमूल्य वनों एवं वनस्पतियों से परिपूर्ण है । प्रकृति की इस अमूल्य धरोहर को बचाये रखना हमारा एवं यहां के निवासियों का प्रथम कर्तव्य होना चाहिये। सरकार को भी इस दिशा में कड़े कदम उठाने की आवश्यकता है जिससे जैवविविधता के इस क्षेत्र को संरक्षित किया जा सके।

डॉ. बिक्रमा सिंह
जैवविविधता और प्रौद्योगिकी वनस्पति विज्ञान (प्रभाग)
सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

आनुवांशिक अभियांत्रिकी द्वारा पादपों में चिकित्सकीय प्रोटीनों का उत्पादन

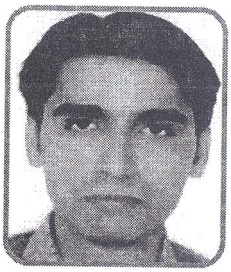

चिकित्सकीय प्रोटीनों का मानव स्वास्थ्य में अत्यंत महत्व है। इन प्रोटीनों का उपयोग विभिन्न प्रकार के रोगों के उपचार तथा उनसे बचाव में किया जाता है। विभिन्न प्रकार के वेक्सीन, हॉरमोन, एंजाइम, एंटिबॉडी तथा वृद्धिकारकों को चिकित्सकीय प्रोटीनों की श्रेणी में रखा जाता है। इन प्रोटीनों के चिकित्सकीय महत्व को देखते हुए, ऐसी प्रोटीनों का गुणवत्तायुक्त और प्रचुर मात्रा में उत्पादन अति आवश्यक है। दीर्घ मात्रा में इन प्रोटीनों को मुख्यत: आनुवांशिक अभियांत्रिकी द्वारा उत्पादित किया जाता है। आनुवांशिक अभियांत्रिकी विषय का विकास जीवविज्ञान की विभिन्न शाखाओं जैसे आनुवांशिकी, सूक्ष्मजैविकी, आणविक, जैविकी तथा जैवरसायन में निरंतर शोधों से हुआ है। आनुवांशिक अभियांत्रिकी द्वारा किसी प्रोटीन के संश्लेषण के लिए उतरदायी जीन की पहचान करके उसकी अभिव्यक्ति किसी भी कोशिका में की जा सकती है। उदाहरण के लिए किसी मानवीय प्रोटीन के संश्लेषण के लिए उत्तरदायी जीन की अभिव्यक्ति जीवाणु कोशिका में की जा सकती है। पिछले कुछ दशकों में अनुवांशिकी का उपयोग करके विभिन्न क्षेत्रों जैसे मानव स्वास्थ्य व कृषि में क्रांतिकारी व लाभप्रद परिवर्तन लाए जा चुके है।

पारंपरिक रूप से, चिकित्सकीय प्रोटीनों का उत्पादन मुख्यत: जीवाणु कोशिका, यीस्ट कोशिका तथा स्तनधारियों की कोशिकाओं का उपयोग करके किया जाता है। किसी चिकित्सकीय प्रोटीन के उत्पादन हेतु उचित जीव कोशिकाओं का चुनाव प्रोटीन के गुण के आधार पर किया जाता है। जैसे कि कुछ चिकित्सकीय प्रोटीनों में संश्लेषण के दौरान तथा उसके उपरांत कुछ अभिक्रियायें होती है जिससे उनमें कुछ निश्चित प्रकार की रासायनिक संरचनाएं जुड़ती है। ऐसी रासायनिक संरचनाएं, प्रोटीन के भौतिक, रासायनिक, जैवीय गुणों को प्रभावित कर सकती है तथा इस प्रकार ये प्रोटीन की गुणवत्ता के लिए भी महत्वपूर्ण होती हैं। उदाहरणस्वरूप कुछ चिकित्सकीय प्रोटीनों में शर्करा की संरचनाएं पायी जाती है जोकि कोशिका में निश्चित प्रक्रिया में एंजाइमों द्वारा जोड़ी जाती है। ये संरचनाओं प्राय: चिकित्सकीय प्रोटीन के परिवहन तथा उसकी क्रियाशीलता के लिए महत्वपूर्ण होती है। इन कारणों से, ऐसी चिकित्सकीय प्रोटीनों के उत्पादन के लिए उन कोशिकाओं का उपयोग किया जाता है जिनमें ऐसी रासायनिक संरचनाएं को प्रोटीन में जोड़ने की क्षमता होती है। पारंपरिक उत्पादन कोशिकाओं का उपयोग चिकित्सकीय प्रोटीनों के उत्पादन में बहुतायत से किया जाता है। परंतु इन पारंपरिक उत्पादन प्रणाली से जुड़ी कुछ समस्याएं व खामियां है। जैसे उत्पादन में प्रयुक्त जीवाणु कोशिका, यीस्ट कोशिका तथा स्तंधारियों की कोशिकाओं की वृद्धि के लिए एक निश्चित माध्यम व

संक्रमण रहित वातावरण की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त अंतिम उत्पाद को मानव संक्रमणकारी रोगाणुओं से प्रभावित होने से बचाना भी परम आवश्यक होता है। इन कारणों से चिकित्सकीय प्रोटीन की गुणवत्ता प्रभावित होती है तथा प्रोटीन उत्पाद का बाजार मूल्य भी काफी बढ़ जाता है। चूँकि चिकित्सीय प्रोटीनों का कम मूल्य में और गुणवत्तायुक्त होती है अत: पारंपरिक प्रोटीन उतपादन प्रणाली में निरंतर संशोधनों की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त प्रोटीन अभिव्यक्तिकरण व उत्पादन के लिए कम खर्च वाले नवीन श्रोतों को विकसित करना भी आवाश्यक होता है। इस दिशा में हुए शोधों के द्वारा, पौधे चिकित्सीय प्रोटीनों के अभिव्यक्तिकरण के लिए नवीन और प्रभावी विकल्प के रूप में सामने आए हैं।

पादप कोशिकाएं भी चिकित्सकीय प्रोटीनों के अभिव्यक्तिकरण के लिए उपयोग में लायी जा सकती है। वास्तव में इस दिशा में शोध कार्य काफी समय से चल रहा है तथा लगभग सभी प्रकार की चिकित्सीय प्रोटीनों का उत्पादन पौधों में किया जा चुका है। अभी हाल ही में वर्ष 2012 में गाजर की ट्रांसजिनी कोशिकाओं से उत्पादित एक चिकित्सकीय प्रोटीन को यू.एस.ए. की एफ.डी.ए. संस्तुति प्राप्त हुई है। अब यह प्रोटीन बाज़ार में उपलब्ध है। नियामक प्रणाली द्वारा किसी पौधे द्वारा उत्पादित चिकित्सकीय प्रोटीन की संस्तुति का यह प्रथम उदाहरण था। इस क्रम में अभी कई चिकित्सकीय प्रोटीन-जोकि पौधों में उत्पादित की गयी है नियामक प्रणाली में संस्तुति हेतु विचारणीय हैं। दूसरे पारंपरिक अभिव्यक्तिकरण कोशिकाओं की तुलना में, पौधों में चिकित्सीय प्रोटीनों के उत्पादन के कई लाभ है। जैसे, पौधों के विकास और वृद्धि के लिए विशेष प्रकार के माध्यम की आवश्यकता नहीं होती है अपितु उन्हें सामान्य परिस्थितियों में बड़ी मात्रा में उगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त पौधों में मानवों के रोगाणुओं का संक्रमण नहीं होता। इन कारणों से पौधों में उत्पादित चिकित्सकीय प्रोटीनों की लागत तुलनात्मक दृष्टि से काफी कम होता है तथा गुणवत्ता भी प्रभावित नहीं होती जोकि इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण तथ्य हैं। जैसाकि पहले ही उल्लेखित किया गया है कि कुछ चिकित्सकीय प्रोटीनों में शर्करा के संरचनाए पायी जाती है जोकि प्रोटीन के गुणों को प्रभावित करती है। पौधों में ऐसी शर्करा संरचनाओं को प्रोटीन में जोड़ने की क्षमता पायी जाती है जोकि लगभग मानवों के जैसी होती है। हलांकि इस सन्दर्भ में पौधों में तुलनातमक दृष्टि से कुछ विभिन्नताएं अवश्य होती हैं जिसके कारण पौधों में प्रोटीन से जुड़ी कुछ निश्चित शर्करा संरचनाएं मानवों की तुलना में भिन्न होती हैं। अत: पौधों को चिकित्सकीय प्रोटीनों के उत्पादन के लिए प्रयुक्त करने हेतु ऐसी शर्करा संरचनाओं का मानवीकरण आवश्यक होता है। आनुवांशिक अभियांत्रिकी का प्रयोग करके वैज्ञानिकों ने पौधों में आण्विक स्तर पर परिवर्तन करके इस दिशा में सफलता अर्जित की है

तथा अब पौधों के ऐसे जीनरूप विकसित किए जा चुके हैं जिनमें चिकित्सकीय प्रोटीनों को मानवों जैसी शर्करा संरचनाओं के साथ उत्पादित किया जा सकता है। पौधों में चिकित्सकीय प्रोटीनों के उत्पादन से जुड़ा एक और महत्वपूर्ण लाभ यह है कि पौधों में बैक्सीनों को खाद्य वैक्सीनों के रूप में विकसित किया जा सकता है। जैसे कि किसी फल में वैक्सीन का अभिव्यक्तिकरण करा कर फल के साथ वैक्सीन की मात्रा को मनुष्य द्वारा आसानी से लिया जा सकता है। वैक्सीनो के भंडारण व परिवहन के लिए विशेष प्रयत्न करने पड़ते हैं। इस दौरान बैक्सीनों को क्रियाशील बनाए रखने के लिए उन्हें कम तापमान पर रखना पड़ता है। पौधों में उत्पादित बैक्सीन के साथ ऐसी समस्याएं नहीं होती क्योंकि पौधों की कोशिकाओं में वैक्सीन प्राकृतिक रूप से भंडारित रहती है तथा उसका परिवहन भी आसानी से किया जा सकता है।

सारणी : पौधों द्वारा उत्पादित कुछ चिकित्सीय प्रोटीनों के उदाहरण*

पौधे का नाम	**चिकित्सीय प्रोटीन उत्पाद का नाम**	**उपयोग**
निकोटियाना बेंथमियाना (तम्बाकू का करीबी पौधा)	जेडमाप (एक वैक्सीन)	एबोला विषाणु के लिए वैक्सीन
डौकस कैरोटा (गाजर)	एलेल्स्यों (गुलूकोसेब्रोसाइदेज एंजाइम, एक चिकित्सीय एंजाइम	गौचर रोग के निदान हेतु एक चिकित्सीय एंजाइम
निकोटियाना बेंथमियाना (तम्बाकू का करीबी पौधा)	एंटिबोडी बैक्सीन	नॉन होजकिन लिंफोमा के इलाज हेतु
निकोटियाना बेंथमियाना (तम्बाकू का करीबी पौधा)	वैक्सीन	इंफ्लुएंज़ा के लिए
निकोटियाना तबैकम (तम्बाकू)	वैक्सीन	एच.आइ.बी. के लिए
शैवाल	वैक्सीन, वुद्धिकारक एंजाइम	विभिन्न रोगों से बचाव व उनके उपचार हेतु
निकोटियाना तबैकम (तम्बाकू)	एंटिबॉडी वैक्सीन	मेर्स कोरोनावाइरस के लिए
मोस	ग्लूकोसेरेब्रासाइदेज एंजाइम	गौचर रोग के निदान हेतु एक चिकित्सीय एंजाइम

*डोकस कैरोटा (गाजर) में उत्पादित एलेल्स्यों बाज़ार में उपलब्ध है और इसका व्यावसायिकरण फाइजर कर रहा है। इसके अतिरिक्त दूसरी प्रोटीन जोकि सारणी में दी गई है उनके द्वारा नैदानिक परीक्षण उन्नति पर है।

सैद्धान्तिक रूप से किसी भी पौधे में अनुवांशिक अभियांत्रिकी द्वारा चिकित्सकीय प्रोटीनों का उत्पादन किया जा सकता है। परन्तु इस कार्य के लिए तम्बाकू के पौधे को बहुतायात से प्रयोग में लाया जाता है। इसके कई कारण है। पहला यह कि तम्बाकू के पौधे से ज्यादा मात्रा में जैव भार प्राप्त किया जा सकता है जिससे बाद में चिकित्सकीय प्रोटीनों का शोधन किया जा सकता है। दूसरा यह कि तम्बाकू के पौधे से अनुवांशिक अभियांत्रिकी द्वारा किसी जीन के लिए ट्रांसजेनी पौधे उत्पादित करना बहुत आसान होता है। चिकित्सकीय प्रोटीनों के पौधों में उत्पादन के लिए आनुवांशिक रूपान्तरण करना आवश्यक होता है। इस सन्दर्भ में दो तरह की प्रणालियां अपनाई जा सकती है। एक प्रणाली में चिकित्सकीय प्रोटीन के लिए उत्तरदायी जीन को पौधे के जीनोम में स्थायी रूप से निरोपित किया जाता है। इस स्थायी प्रणाली से उत्पन्न ट्रांसजेनी पौधे में चिकित्सीय प्रोटीन के लिए उत्तरदायी जीन पीढ़ी दर पीढ़ी वंशानुगत होता रहता है। इस प्रक्रिया में समय ज्यादा लगता है। दूसरी प्रक्रिया में जीन को पौधे में स्थायी रूप से निरोपित नहीं किया जाता वरन इसकी पौधे में क्षणिक अभिव्यक्ति कराई जाती है। इस प्रक्रिया में केवल कुछ समय मं ही चिकित्सीय प्रोटीन को ज्यादा मात्रा में उत्पादित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अस्थाई प्रक्रिया से पौधों में प्रोटीन उत्पादन का एक और लाभ यह भी है कि किसी आपात स्थिति में बहुत कम समय में चिकित्सकीय प्रोटीनों का पौधों में उत्पादन किया जा सकता है, जैसे कि किसी महामारी में समय पौधों में वैक्सीन का उत्पादन कम समय में संभव है। अभी हाल में ही इस प्रक्रिया का उपयोग करके एबोला विषाणु के लिए यू.एस.ए. ने वैक्सीन तैयार की थी।

उपरोक्त विवेचना से यह स्पष्ट है कि पौधे चिकित्सकीय प्रोटीनों के उत्पादन में एक उपयोगी विकल्प सिद्ध हो चुका हैं। चिकित्सीय प्रोटीनों का कम लागत में उत्पादन भारत जैसे विकासशील देशों के लिए परम आवश्यक है। अतः अपने देश में इस दिशा में अधिक शोध कार्य की आवश्यकता है। इसको ध्यान में रखते हुए हमारे संस्थान भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू में इस क्षेत्र में शोध कार्य आरंभ हो चुका है। यह आशा की जाती है कि भविष्य में हम विभिन्न प्रकार की चिकित्सीय प्रोटीनों की पौधों द्वारा उत्पादन की तकनीक विकसित करने में सक्षम होंगे।

प्रशान्त मिश्रा
वैज्ञानिक, पादप जैव प्रौद्योगिकी विभाग,
भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

मासूम बच्ची (कहानी)

बच्ची के रोने का स्वर लगातार बढ़ने लगा था। नवजात बच्चे का रो-रोकर गला हलकान होने लगा। सूरदास दीवार से सटा लेटा था। वह हमेशा इस बर्षाशालिका में पसरा पड़ा रहता। उनींदा वह आँखें फाड़े अन्धेरे को भेदने की नाकाम कोशिश करने लगा। उसके लिए चाहे रात हो या फिर दिन, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसका जीवन ही अन्धकारमय है। वह जन्मजात अन्धा पैदा हुआ था। तभी किसी ने उसे सूरदास कहा तो सभी उसे सूरदास कहकर बुलाने लगे। मां-बाप का रखा नाम कृष्णा कोई भूलकर भी नहीं लेता था। सूदरदास ने अपनी पुरानी कम्बली उठाई तथा जिस ओर रोने का स्वर सुनाई पड़ रहा था। उधर लाठी के सहारे चलता जा पहुँचा जहाँ वह लेटा था, उससे थोड़ी सी दूर दुकान की सीढ़ियों के ऊपर बच्ची रोता-विलखता उसे अपनी ओर खींच ले गया। उसने अपने हाथों से टटोला था, अन्धेरे में। वहाँ कम्बल में लिपटा नवजात बच्चा पड़ा था। उसने झट उसे उठाकर अपनी छाती से लगा लिया। बच्चा उसकी छाती से लिपटकर चुप हो गया। सूरदास ने मन ही मन सोचा था। लगता है कोई पत्थर दिल मां, अपनी नवजात बच्ची को यहाँ ठंड में मरने के लिए छोड़ गई होगी। उसने वहीं खड़े होकर पुकारा भी था। "कौन है, जो इस बच्ची को यहाँ छोड़ रहा है। कोई छुपा है तो सामने जाओ। इस मासूम को क्यों मौत के हवाले करते हो। कौन है इस नन्हीं जान की हत्यारिन। बोलते क्यों नहीं । कोई ऽऽऽऽ है ?" सूरदास ऊँचे स्वर में बोलता रहा था। किन्तु वहाँ कोई होता तो उसकी सुनता वहाँ रात के सन्नाटे को तोड़ती एकमात्र सूरदास की स्वरलहरी गूंजी थी। लगता है इसे कोई छोड़कर भाग गया है। कितने पापी हैं यह लोग जो अपने खून को यूं बेमौत मरने के लिए मौत के मुंह में छोड़ जाते हैं। सूरदास ने अह भरी थी। जिसकी गोद में लिपटी काया कापी थी तब । उसने नन्हीं बच्ची की छाती पर हौले से हाथ फेरा था। धड़कन चल रही थी। हाँ बच्ची की छाती से घर्र-घर्र की आवाज निकल रही थी। उसे लगा, बच्ची की छाती ठंड से जाम हो गई थी। वह अपने स्थान पर चला आया उसने पृथ्वी पर बिछी चादर ठीक कर डाली।

वह बच्ची को गोद में लिए बैठ गया था। उसने बच्ची का कम्बल सीधा करना चाहा तो उसके हाथ से कुछ टकराया था। उसने अनुमान लगा लिया था। बच्ची की दूध की बोतल तथा एक थैली थी। सूरदास ने बच्ची के मुंह में बोतल डाल दी। बच्ची चपर-चपर करती दूध पीने लगी थी। सूरदास को थोड़ा राहत मिली थी तब। वह जान गया, कि थैली में बच्ची के कपड़े होंगे। उसने थैली को वैसे ही पड़ा रहने दिया था। रात का अन्तिम पहर रहा होगा। आस पास की सारी दुकानें बंद पड़ी थी। इस वक्त वह कहाँ जाए। सूरदास असमंजस की स्थिति में रहा कुछ देर तक। फिर उसने निर्णय लिया। दुकान खुलते ही वह रोशन की मदद लेगा। रोशन की चाय की दुकान बर्षा शालिका के पास बनी थी।

तब तक इस नवजात बच्ची को ठंड से बचाना होगा उसे। वह यह भी सोचने लगा था। जो मां इसे यूं खुले में मरने को छोड़ गई, उसकी क्या मजबूरी रही होगी ? यह तो वह ही जानती है। मेरा धर्म है इसको बचाना। पूरी रात ठंड़ में पड़ी रही थी। अब कैसे चुपचाप सो रही थी। सूरदास ने जिन्दगी में पहली बार

किसी बच्ची के सिर पर प्यार भरा हाथ फेरते कहा था। भगवान तेरी उम्र लम्बी करे बेटी। तुझे कुछ न हो। वह बुदबुदाया था। वह उसे गोदी में लिए यूँ ही बैठा रहा। उसकी आँखों की नींद तो उड़ चुकी थी। उसने लोगों की इस घटिया सोच तथा उनकी पशुता-नीयता भरी अमानवीयता को लेकर बहुत सोचा भी था। कैसे-कैसे लोग इस दुनिया में भरे हैं। इन पापी लोगों से इस पृथ्वी का भार कई गुणा बढ़ गया था। तभी तो पृथ्वी कांपती रहती हैं। आएदिन भूचाल के झटकों से। उसने बच्ची को भलि-भाँति लपेटकर रख लिया था।

तभी सहसा उसे एक पुरानी घटना की याद ताजा हो उठी थी। रोशन ने उसे सुनाई थी वह लोमहर्षक घटना। जानकारी देते हुए रोशन ने कहा था। बाबा ऽऽऽ सूरदास ऽऽऽ यह दुनिया रहने के काबिल नहीं रही अब। पाप-अत्याचार-चोर बाजारी-भ्रष्टाचार तो बढ़ रहा है, पर यह घटना रोंगटे खड़ी कर डालने वाली रही। बाजार में एक आवारा कुत्ता अविकसित भ्रूण को मुँह में उठाए चला जा रहा था। तभी एक दुकानदार की उस कुत्ते पर नजर गई तो वह चिल्लाया था। बच्चे को कुत्ता उठाए ले जा रहा है। उसकी आवाज सुनकर दो-तीन दुकानदार भी कुत्ते के पीछे दौड़े थे। तभी कुत्ते ने डर कर भ्रूण को वहीं फैंका तथा भाग गया था। उन दुकानदारों ने मिलकर उस अविकसित भ्रूण को दूर जाकर मिट्टी में दबाया था। रोशन की यह सारी बातें सुनकर सूरदास का मन भर उठा। ''यह पाप का घड़ा कब फूटेगा। यह तो भगवान ही जानते हैं। आदमी कितना गिर चुका है, रोशन बाबू।'' सूरदास ने यही शब्द कहे थे तब। रोशन उसको कई वर्षो से सुबह-दोपहर-शाम चाय देता है तथा खाने को रोटी भी कभी-कभार देता रहता था।

सूरदास का इस संसार में अपना कहने को काई नहीं है। उसके मां-बाप बचपन में ही चल बसे थे। वह तब पांच वर्ष का रहा होगा। वह मां-बाप को याद करके रोता रहता। भला उसको कौन पूछता। कई गाँव के शरारती बच्चे उसे चिढ़ाते कहने लगे। सूरदास जा ऽऽऽ गाना गा। तुझे भीख मिल जाएगी। वह सोचता वह भला क्यों भीख माँगे। उसके चाचा-चाची तो हैं। वह उसे रोटी देंगे, उसकी देखभाल करेंगे। लेकिन माँ-बापके मरने के वर्ष भर बाद ही, सब कुछ बदल गया था। जिन्हें वह अपना समझता था। वह बेगाने हो चले थे। उन दिनों उसकी चाची रोज ही उसे धमकाती कहती काहे को यहाँ पड़ा रोटी तोड़ता है। जा ऽऽऽ कहीं जाकर भीख माँग। तेरा अब रहा ही क्या है। यहाँ तेरे बाप के खेत को बेच कर हमने तेरे माँ-बाप की वार्षिकी कर डाली। टूटा पड़ा मकान जो है, वहां हम पशु बाँधते हैं। तू ठहरा न किसी काम का, बस दुश्मन अनाज का। अन्धे से क्या काम लूँ। तेरी भलाई इसी में तू दफा हो जाऽऽऽ नहीं तो मार-मार के तेरा भुरता बना डालूँगी। भूखा पड़ा रहेगा तो तेरी अक्ल ठिकाने आएगी। चाची हर बार उसे दुतकारती-लताड़ती रहती थी। चरची के व्यंगबाणों से सूरदास का सीना सदा जख्मी रहने लगा था। एक दिन उसके चाचा ने सूरदास से किसी सरकारी कागज पर उसका अंगूठा लगवाया था तथा अपनी पत्नी को कहा था। हम कुत्ते को भी दो टाईम रोटी डालते हैं। इस अंधे को भी दो टकुड़े फैंक दिया करना। पड़ा रहने दे। यूँ ही मर-मरा जाएगा। हमारा क्या जाता है।'' चाचा के मन के उदगारों को सुनकर सूरदास का कलेजा मानो फट गया। वह चाची से न तो रोटी मांगता था। न ही चाय । दे देती तो पी लेता नहीं तो भूखा पड़ा रहता । लेकिन जिस दिन उसके चाचा ने यह कड़वे बोल कहे थे। उसका मन उचाट हो गया तथा एक रात को वह चुपके से घर से भाग चला आया था। पहले वह इधर-उधर धक्के खाता-फिरता रहा। उसने कईयों के पैर भी पकड़े। कोई

काम दे दो। वह दो रोटी दे देना। लेकिन कोई न माना। सब करते तुझ अंधे को क्या काम सौपें। यहाँ आँखों वाले भूखे-बेरोजगार घूम रहे हैं। तूऽऽऽ जाकर गानाऽऽ गा, भीख माँग। लोग तुझ पर तरस खाकर तुझे भीख अवश्य दे देंगे। वह तीन दिन से भूखा-प्यासा था। जब उसे कोई काम नहीं मिला, कोई सहारा नहीं मिला तो थक हार कर वह भीख माँगने लगा था। पहले दिन ज बवह भीख माँगने लगा तो उसे लगा, इससे तो अच्छा है, वह कहीं डूबकर कर मर जाएं। यह भी कोई जीना है। वह मर तो नहीं पाया हाँ गानाऽऽऽ गाकर भीख जरुर मॉगने लगा था। लोग उसे रोटी देते। रुपये देते। फिर वह यहाँ वर्षाशालिका में बैठकर भीख माँगता। रात को यहीं पसर भी जाता। वह इन्हीं सोचों में डूबा, दिन चढ़ने का इंतजार कर रहा था। रोशन ही सबसे पहले पाँच बजे चाय की दुकान खोलता था। वह आए तो बात बने। क्या वह इस बच्ची को पुलिस स्टेशन ले जाए। लेकिन उसने रोशन के आने का इंतजार करना बेहतर समझा था। न जाने वह कब आएगा। एक-एक पल उसे भारी जान पड़ रहा था। तभी उसे लगा था, रोशन ने दुकान का शट्टर उठाया है। वह रोशन ही होगा ? थोड़ी देर बाद वह उसकी चाय बनाकर ले आएगा। वह अपने लिए चाय बनाता तो सूरदास के लिए भी बना डालता था। ''बाबाऽऽ सूरदासऽऽ रात-राम, रात कैसी कटी। परेशान लग रहे होऽऽ बाबा। लोऽऽ चाय तो पिओ। वह बोला था। बात ही कुछ ऐसी है। चाय का कप लेकर सूरदास ने अपनी कम्बली उठाई थी।

''कोई रात्रि के अन्तिम पहर में इस फूल सी बच्ची को लावारिस छोड़ गया था मरने के लिए। सूरदास ने तभी उसे सारी बातें भी बता डाली थी।

बच्ची ने करवट बदली थी। यह तो लड़की है। रोशन ने कहा था। ''लड़का होता तो कोई भला क्यों छोड़ता ऐसे।'' सूरदास ने उत्तर दिया था। ''लड़कियों को लोग अभी भी भार समझते हैं। रोशन ने कहते हुए आह भरी थी। तभी बच्ची ने पेशाब से कपड़े गीले कर डाले ? तो सूरदास ने वह थैली रोशन को देते कहा था।''

''रोशनऽऽ बाबू देखो इस में बच्ची के कपड़े (वस्त्र है क्या ?)'' रोशन ने थैली खोली तो उसमें दो जोड़ी वस्त्र पड़े थे तथा एक लिफाफा भी था । जिसे रोशन ने खोलकर देखा तो उसमें सौ-सौ रुपये के पांच नोट भी थे।

''बाबाऽऽ बच्ची के दो जोड़ी कपड़े हैं तथा सौ-सौ रुपये के पांच नोट भी हैं। रोशन ने सूरदास को बताया तथा बच्ची को अपनी गोद में उठाकर उसके गीले वस्त्र बदल डाले। रोशन को उस बच्ची से बहुत लगाव होने लगा था। बड़ी बड़ी आंखों वाली सुन्दर सी गुड़िया समान थी वह नवजात बच्ची। उसका दिल पसीजा था।

''बाबा आप तो जानते हैं। मेरे कोई औलाद नही। कितने वर्षो से पत्नी की गोद सूनी पड़ी है। क्या मैं इसे पाल नहीं सकता मैं इसे गोइ लूँगा। मेरी पत्नी कितनी खुश होगी, इसे पाकर।'' रोशन का मन खिल उठा था। ''रोशन बाबू लगता है बच्ची तन्दुरुस्त है। पहले इसे लेकर पुलिस स्टेशन चलते हैं। फिर डॉक्टर के पास ले चलना।'' सूरदास ने चाय का खाली कप रखते कहा था।

''बाबा देखोऽऽ बच्ची मुस्कुरा रही है। माना कोई सपना देख रही हो।'' तभी बच्ची उठकर रोने लगी थी। शायद उसे भूख लग आई बाबा इसे जरा देखोऽऽऽ मैं इसके लिए दूध थोड़ा सा गर्म करके लाता हूँ। बच्ची को सूरदास की गोद में रखते हुए, रोशन ने बच्ची की बोतल उठाई थी वह दूध ले आया था बोतल भरके। हाथ लगाकर बोतल को देखा दूध ठंड़ा था थोड़ा। उसने बच्ची के मुँह में निप्पल डाल दी। बच्ची चपर-चपर पीने लगी। रोशन गोद में उठाए उसे निहार रहा था।

''चलो चलें पुलिस ही अब इस बात का फैसना करेगी।'' सूरदास ने अपनी लाठी उठाई थी।

तभी कल्लू भी चला आया था। रोशन का नौकर उसे आते देखकर। रोशन ने उसे समझाते कहा था।

कल्लू तू दुकान सम्भाल, दूध गर्म कर लेना झाड़-पौंछ भी कर तब तक। मैं बाबा सूरदास के साथ पुलिस थाने जा रहा हूँ।

कोई पापी इस नन्हीं सी परी सी गुड़िया परी रानी को रात के अन्धेरे में छोड़कर चला गया था।''

कल्लू ने इतना सुना तो उसका मुँह खुला का खुला रह गया था। उसने बच्ची को पास से निहारा था। कितनी मासूम है। उसने सोचा । उसका दिल भर आया था।

ठीक है मालिक मैं दुकान सम्भालता हूँ। वह भारी मन से उठकर चला गया।

फिर दोनों बच्ची को लेकर पुलिस स्टेशन की ओर जाने लगे थे। रोशन ने मन ही मन भगवान से प्रार्थना करते कहा था। हे! भगवान यह बच्ची मुझे मिल जाए। मेरी विनती स्वीकारना।'' मैं इसे पालूँगा-पढ़ाऊँगा तथा इसकी भली-भांति देखभाल करूँगा।''

उधर सूरदास ने आँखों से आसपास को धूरा था। उसने आकाश को देखते मन ही मन कहा था। हे भगवान मैं तो जन्मजात अन्धा हूँ। लेकिन मैं उन लोगों के लिए क्या कहूँ, जिनकी आत्माएं अन्धी है, मन अन्धे हैं। कारनामे अन्धे हैं। उन सब लोगों को रास्ता दिखाना प्रभु। जिनके भीतर की ज्योति बुझ चुकी हो। यह घोर कलयुग का युग है। ऐसे ही मन के अन्धे लोग अपनी बच्चियों को खुले में मरने के लिए छोड़ जाते हैं। इन बच्चियों का भला क्या दोष है। भगवान इन मासूमों की रक्षा करना। इन्हें बस तेरा ही तो सहारा है। सूरदास बड़बड़ाता रहा था। तब रोशन ने एकाएक उससे पूछ भी लिया था।

''बाबा आकाश को क्यों घूरते हो। क्या कुछ मुझसे कहा तुमने।'' रोशन ने सूरदास की मुखाकृति को पढ़ा था तब ''कुछ नहींऽऽऽ रेऽऽऽ मैं क्यों कहूँगा ?'' इतना कहकर वह लाठी बजाता रोशन के पीछे-पीछे चलता रहा था। दोनों पुलिस स्टेशन के गेट पर जा पहुँचे थे। तब हल्का-हल्का भोर का प्रकाश सर्वत्र फैलने लगा था।

नरेश कुमार 'उदास'
बनतलाब, जम्मू

भीष्म साहनी का साहित्य चिंतन के विविध आयामों का द्योतक

इस आधुनिक दौर में मनुष्य के जीवन के लिए चिंतन एक आवश्यक तत्व नज़र आता है। सभी साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से समाज को कुछ-न-कुछ चिंतन अवश्य प्रदान करते हैं। हिन्दी साहित्य में चिन्तनीय रचनाकारों की लम्बी कतार में भीष्म साहनी का स्थान महत्वपूर्ण है, ''कोई बात समझने या सोचने के लिए मन में बार-बार किया जाने वाला उसका ध्यान या विचार मन-ही-मन किया जाने वाला विवेचन चिंतन है।''1 मनुष्य एक मननशीलता प्राणी है, उसके मन में सदैव कुछ-न-कुछ चिंतन अवश्य रहता है। जो उसके अपने और आस-पास के वातावरण से विकसित होता है। चिंतन मस्तिष्क की वह क्रिया है, जो किसी समाज के सामने आने पर उसे हल करने के लिए उत्पन्न होती है अर्थात् अतीत के अनुभवों पर विचार करके आज की समस्या का समाधान ढूँढना ही चिंतन है।

हमारे संकल्प, हमारे सोचने समझने की शक्ति और चिंतन हमारे चारों ओर का ही नहीं बल्कि पूरी सृष्टि के वातावरण का निर्माण करता है ''व्यक्ति-मन में जैसा चिंतन करता है, वैसी ही उसके शरीर के अन्दर के अवयव अथवा हारमोन्स भी कार्य करने लगते हैं, तदनुसार ही उसके अंगों में भी वैसी ही प्रक्रिया होने लगती है, यह सब हमारे शरीर से निकलने वाली रिपल्सिव अथवा अट्रेक्टिव तरंगों के कारण ही होता है''2 स्पष्ट है कि मनुष्य अपने वातावरण का निर्माता स्वयं होता है।

भीष्म साहनी का पूरा साहित्य आत्म चिंतन का भंडार है जो समग्रता में उनके जीवन दर्शन का रूपायित करता है। उनका चिंतन अनुभव से भरा व्यावहारिक दृष्टि से सार्थक है। मैं उनके सभी साहित्य के चिंतन को स्वयं प्रस्तुत नहीं कर रहा हूँ सिर्फ उनकी खास रचनाओं तक ही सीमित रहूँगा। भीष्म साहनी के नाटक 'हानूष' में 'हानूष सत्रह साल की कड़ी मेहनत कर आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक दबावों को झेलता हुआ एक घड़ी बनाता है। पुरस्कार के रूप में राजा उसकी दोनों आँखें निकलवा देता है, ताकि हानूष दूसरी ऐसी घड़ी न बना सके। लेखक ने इस नाटक में पुराने समय की एक कथा को लिया है। यहाँ चिंतन का विषय यह है कि आज भी हमारे समाज में हानूष जैसे कई सृजनशीलता कलाकार हैं जो आज भी हजारों विपदाओं को झेलने के बाद अपनी कला सिद्ध करते हैं पर उनकी सृजनशीलता इस दौर की भ्रष्ट राजनीति के आगे तहस-नहस होती जा रही है।

चिंतन के किसी-न-किसी पहलू को भीष्म साहनी अपनी हर रचना के मध्यम से समाज में लाना चाहते हैं। नाटक 'माधवी' महिला सशक्तिकरण के सभी पहलुओं की वाट लगाना नज़र आता है। जब माधवी पाँच वीर पुत्रों को जन्म देने के बावजूद न तो किसी पुरुष की पत्नी कहलाती है न किसी पुत्र की माँ। जिस तरह गालव (प्रेमी) और ययाति (पिता) माधवी का अपना मतलब निकालने के लिए उसे प्रयोग करते हैं एक रोंगटे खड़ा कर देने वाला तथ्य सामने आता है। आधुनिकता के इस दौर में भी

कितनी ही माधवियाँ प्रयोग हो रही हैं इस तथ्य पर शायद ही कभी किसी न किसी ने चिंतन किया हो। नाटक में माधवी का यह कथन पुरुष-सत्ता के परखचे उड़ाता नज़र आता है ''एक कर्त्तव्य मेरे पिता का, एक कर्त्तव्य मुनिकार गालव का, दोनों के कर्त्तव्य मेरे माध्यम से पूरे हो रहे हैं ..... पिता ने मुझे सौंपकर अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया। एक दानवीर बन गया, दूसरा आदर्श शिष्य। और माध्वी?''3 यह घटनाएं आज भी समाज में जस-की-तस व्याप्त हैं केवल उन घटनाओं के स्वरूप और माध्यम बदल गए हैं।

भीष्म साहनी का उपन्यास 'तमस' और आत्मकथा 'आज के अतीत' तो चिंतन के विविध आयामों के दस्तावेज़ हैं जो आज भी प्रासंगिक हैं। उनकी कहानी 'चीफ की दावत' मध्यवर्ग के दिखावे और खोखलेपन को खोलकर रख देती है। 'गँगो का जाया और 'जोत' जैसी कहानियाँ बाल मज़दूरी, महिला सशक्तिकरण और किसानों की समस्याओं को उजागर करती हैं। उपन्यास तमस में धर्म के नाम पर हुई एक छोटी सी लड़ाई का दुष्परिणाम विभाजन के रूप में देखने को मिलता है। माधवी नाटक में माधवीस हुई अमानवीय घटनाओं पर जब तक हर व्यक्ति स्वयं चिंतन-मनन नहीं करेगा तब तक दामिनी बलात्कार और बम्बई में हुए ताज हमले जैसे दुष्कांड दोहराए जाते रहेंगे।

आधुनिक समाज में दिनोंदिन विकास बढ़ता जा रहा है जिसके पहले सामज में अनेक विचारधाराएँ जन्म ले रही हैं। आरक्षण, महिला सशक्तिकरण, बाल मज़दूरी आदि पर कई योजनाएँ बनाई जाती हैं, पर हैरत इस बात की है कि इन सारी योजनाओं और विचारधाओं का महत्व दिन-प्रतिदिन क्षीण होता जा रहा है। यह लागू तो होती है पर न ही इनमें स्थिरता देखने को मिलती है और न इन पर व्यवस्थित ढंग से चिंतन ही होता है। ऐसी स्थिति में भीष्म साहनी का साहित्य जगत व्यापक दृष्टि और परिदृश्य के साथ किसी विषय, स्थिति आदि पर विचार एवं चिंतन करता है। भीष्म साहनी का सम्पूर्ण साहित्य समाज के प्रति उनकी गहन विचारधारा तथा चिंतन के विविध आयामों से भरा पड़ा है। आधुनिक समय में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में चिंतन-मनन करना आवश्यक बन चुका है। वर्तमान का चिंतन एक साधारण, व्यर्थ और नकारात्मक विचार बनकर रह गया है जिसकी पूर्ति भीष्म साहनी और उनके साहित्य में परिलक्षित होती है।

रवि कुमार
जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

1. मानव विशाल हिन्दी शब्द कोश : खण्ड दो पृ : 38
2. ज्ञानामृत '1996', पृ : 26
3. माधवी, पृ : 65

हिन्दी उपन्यासों में सांप्रदायिकता की आग में झुलसता जन-जीवन

15 अगस्त 1947 ई. को आजादी पाने का हर्ष कम न था किन्तु यह आजादी हमें जिस कीमत पर प्राप्त हुई वह पीड़ा कम न थी। स्वाधीनता हमें समझौते के रूप में प्राप्त हुई। भारत के अमूर्तभाव आजादी के प्रति जन-मन में जो उल्लास था उसे आज़ादी का खण्डित प्रतिमा ने ठण्डा कर दिया। समझौते की स्वाधीनता ने देश के विभाजन का नया अध्याय लिखा। एक ओर देश स्वाधीनता प्राप्ति पर पुलकित था तो दूसरी ओर विभाजन पर त्रासदी पर दुखी ? इस विकट हादसे में विभिन्न धर्मी-संस्कृतियों के लोग, अप्रत्याशित रूप से बुरी तरह घिर गए थे। इस बंटवारे के कारण सारा भारत साम्प्रदायिकता की ऐसी ज्वाला में दग्ध होने का अभिशप्त हुआ जिसकी दूसरी मिसाल भारतीय इतिहास में नहीं मिलती सदियों से अर्जित संस्कृति, जातियता, भाषा और प्रकृति तथा मानवीय सम्बन्ध साम्प्रदायिक आग में जलकर राख हो चुके थे। इस एक घटना ने भारतीय राजनीति और संस्कृति के स्वरूप को जितना प्रभावित किया उतना शायद ही अन्य किसी घटना ने किया हो। विभाजन स्कूल और भौतिक रूप में ही एक दूर्घटना नहीं थी, यह एक मानवीय ट्रेजड़ी थी जिसमें लाखों लोगों को भावनात्मक, विचारात्मक, मनोवैज्ञानिक, मानसिक और आत्मिक स्तारों पर प्रभावित किया था। यह दुर्घटना केवल राजनीतिक या किसी एक वर्ग विशेष से जुड़ी हुई नहीं थी, बल्कि इससे लाखों-करोड़ों लोगों के जीवन उनका वर्तमान और भविष्य, उनकी सभ्यता और संस्कृति, उनका आचरण और व्यवहार भी जुड़ा हुआ था। यह अनोखा बटवारा था जिसमें लोगों के दिल पहले बंट गए भूगोल का बटवारा क्या हुआ उससे कितने, दिल टूट गये, कितने लोग घर से वेघर हो गये । जमीन, जायदाद का तो हिसाब पटवारी खाते में मिल सकता था, पर कितनों के दिलों की बस्तियाँ बरबाद हुई। कितनों के अरमानों के महल ढह गये इसका हिसाब किसी पटवारी खाते में नहीं था। हिन्दुओं का प्रबल कट्टरता तथा मुसलमानों के उससे भी अधिक कठोर हो जाने से भारत को बड़ी हानि उठानी पड़ी। एक और मुस्लिम लीग तथा दूसरी ओर हिन्दु महासभा...."महाभारत में सुना था कि कौरव और पाण्डव राज्य के लिए आपस में लड़ मरे। ऐसे ही नेहरू और जिन्ना लड़े हैं"।

देश विभाजन से पूर्व सन् 1937 में आम चुनाव कराए गए थे जिसमें कांग्रेस को भारी बहुमत से विजय प्राप्त हुई थी और मुस्लिम लीग बुरी तरह से पराजित हुई थी। तब उसे मुस्लिम जनसंख्या के केवल पाँच प्रतिशत मत प्राप्त हुए थे जबकि कांग्रेस ने ग्यारह में से आठ प्रान्तों में शासन की बागडोर सम्भाल ली थी। कांग्रेस ने मिली-जुली सरकार बनाने तथा मुस्लिम लीग के मुसलमानों ने प्रतिनिधि संस्था मानने से इन्कार कर दिया। इन बातों से मुसलमानों में व्यापक तौर पर असंतोष फैल गया था जिसमें मुस्लिम लीग ने मुसलमानों को अपने पक्ष में संगठित करना शुरू कर दिया।

सन् 1937 में आम चुनाव में असफल हो जाने के बाद मुस्लिम लीग ने अपनी गतिविधियां और कार्यवाहियां और तेज कर दी। धर्म उनकी कूटनीति का मुख्य आधार बन गया था। इसी धार्मिक कूटनीति

का उल्लेख करते लेखिका लिखती है- ''धर्म से डराने वाले खुद बड़े ही ढोंगी है। धर्म के नाम पर इंसान का देश का बंटवारा करते है? कूटनीति, स्वार्थ, लड़ाई और खून-खराबे से कभी किसी का भला हुआ। धर्म के नाम से जब भी लड़ाई हुई तब नाश ही हुआ है''।

जिन खौफनाक साम्प्रदायिक स्थितियों से बचने के लिए विभाजन स्वीकार कर लिया गया था, वह ही साम्प्रदायिक गतिविधियां विभाजन के दिनों में और विभाजन के बाद और तीव्र और भयानक हो गई।

इन साम्प्रदायिक दंगों में हजारों व्यक्ति मौत के घाट उतार डाले गए, स्त्रियों और बच्चों के साथ अमानसिक त्याचार किया गया, लाखों लोग विस्थापित हो गए तथा सम्पूर्ण देश की जनता को विस्थापन कर भारत या पाकिस्तान की सीमा के भीतर जा पहुँचना पड़ा। इस प्रक्रिया में पाकिस्तान से भारत आ रहे या भारत से पाकिस्तान जा रहे लोगों से भरी ट्रेनों को काट डाला गया और लाशों के ढेर लग गए वास्तव में दो देशो का विभाजन तो घोषित हो गया किन्तु जनता की अदला-बदली या सीमाओं का उचित निर्धारण की सही व्यवस्था नहीं कर गई थी। देश विभाजन के समय हुए साम्प्रदायिक दंगों की अभिव्यक्ति करते हुए लेखिका 'पांसग' में बुलकी दादी द्वारा स्पष्ट करते हुए कहती है- ''मृतक, आजाद हो गया, जिस आजादी, में इतने बेगुनाहों की मौत लिखी हो, वह आजादी किस काम की? हिन्दू-मुसलमान दो भाई थे। दोनों का एक माँ से दूध का रिश्ता था, अब दोनों एक दूसरे के दुश्मन हो गये है।''

हिन्दु-मुसलमान के साम्प्रदायिक झगड़ों का विश्लेषण करते हुए लेखिका कहती है ''पहले जो हिन्दु-मुसलमान सगे भाइयों की तरह रह रहे थे। अब दो बृत्तों की तरह लड़ रहे हैं। अपनी गली में जैसे लड़ने दूसरी गली के कुत्ते को देखकर कुत्ते लड़ने दौड़ते है ऐसे सब एक दूसरे को चीथे खा रहे है''।

उपन्यास 'समंगगण' में डाक्टर की मृत्यु शहर में दंगे फैल जाते है ''डाक्टर अहमद की मृत्यु से सभी मुस्लिम समुदाय के लोग भड़क उठे थे। शहर में दंगा हो गया था। शंका और संशयों से वातावरण गरम था। अस्थिरता का वातावरण सब दूर छा गया था'' साम्प्रदायिकता के कारण परिस्थितियाँ कब भयंकर हो ले कहा नहीं जा सकता। उपन्यास 'अक्षयवट' में लेखिका ने साम्प्रदायिक दंगों का चित्रण किया है। उपन्यास का पात्र नही इन साम्प्रदायिक दंगों में अपने पिता नर्सीम को खो चुका है। हिन्दू और मुसलमानों के बीच तनाव की स्थिति भयंकर रूंप धारण करती है- ''हिन्दू-मुसलमान दंगे में अपने हिन्दू दोस्त को बचाते समय गलती से चाकू नसीम के सीने में धँस गया।'' साम्प्रदायिकता की आग में जन-जीवन जुलस कर रह गया है। इस का वर्णन हिन्दी लेखिकाओं में अपने उपन्यासों के माध्यम से किया है।

मुक्ति शर्मा
जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

हिन्दी भाषा की स्थिति और हमारी जिम्मेदारी

हिन्दी हमारे देश की राष्ट्रीयता को परिभाषित करती है और यह हमारे देश की सभी क्षेत्रीय भाषाओं में भी प्रतिबिंबित होती है। हिन्दी निश्चित ही सक्षम और सशक्त भाषा है, इसमें कोई दो मत नहीं है। विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच हिंदी भाषा एक पुल है, जिसके सहारे विभिन्न भारतीय भाषाओं में समन्वय निर्माण किया गया है। देश के विभिन्न हिस्सों में हम धर्म, व्यापार पर्यटन के क्षेत्र में हिंदी भाषा रूपी पुल को बखूबी महसूस कर सकते है। हिन्दी भारत की सभी भारतीय भाषाओं के बीच समन्वय का काम बखूबी करती है। श्री रवींद्रनाथ टैगोर जी ने भी कहा है कि 'भारतीय भाषाएं नदियां है तो हिन्दी महानदी है।' गांधी जी ने हिन्दी भाषा का उपयोग स्वाधीनता संघर्ष की वाणी के रूप में किया और यह उस दौर में जन-जन की भाषा बन गई।

आज हिन्दी विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है। आंकड़ों के मुताबिक हिन्दी विश्व की तीसरी बड़ी भाषा है और तेजी से दूसरे क्रमांक की ओर बढ़ रही है। हाल ही के कुछ अध्ययनों में तो हिन्दी को विश्व की पहली भाषा भी सिद्ध किया जा चुका है। विश्व के लगभग 150 देशों में हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जाता है, इनमें फिजी, गियाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद, ब्रिटेन, कनाडा, नीदरलैंड, स्वीडन, डेनमार्क, सिंगापुर, थाईलैंड, मलेशिया, इंडोनेशिया, न्यूजीलैंड, कैनिया, युगांडा, तंजानिया, हंगरी, नेपाल, श्रीलंका, युगोस्लाविया, बुल्गारिया, पोलैंड, रोमानिया, क्यूबा, वेनेजुएला, कोलंबिया, चिली इत्यादि देश प्रमुख है। इनमें से कुछ देशों जैसे अफ्रीका महाद्वीप के अनेक देश जैसे केनिया, युगांडा, जैबिया इत्यादि देशों में हिन्दी के अतिरिक्त भारत की क्षेत्रीय भाषाएं गुजराती, पंजाबी भी पढ़ाई जा रही है। जापान के 9 तथा रूस के 34 विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था है। इसके अलावा विदेशों से कई विद्यार्थी प्रतिवर्ष हिन्दी सीखने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय तथा वर्धा स्थित महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में प्रवेश लेते है। हाल ही में भोपाल में भी इसी तरह के एक हिन्दी विश्वविद्यालय की भी स्थापना की गई है।

जहां एक ओर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा महत्व और प्रयोग बढ़ रहा है, वहीं दूसरी ओर शिक्षा, विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र, प्रशासकीय कामकाज में हिन्दी का प्रयोग बहुत कम है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की प्रसिद्धि और लोकप्रियता में निरंतर बढ़ोत्तरी होने से गर्व होता है वहीं अपने ही देश में हिन्दी की दुर्दशा किसी से छिपी नहीं है। हम सभी जानते है कि अपने ही देश में हिंदी आज भी राष्ट्रभाषा-राजभाषा के रूप में भली प्रकार से स्थापित नहीं हो पाई है। आज हम अपनी हिन्दी भाषा को उसका वह सम्मान नहीं दिला पा रहे है, जिसकी वह अधिकारिणी है। बात अंग्रेजी भाषा के विरोध की नहीं, हिन्दी को अपनाने की है। बहुत से लोग हिन्दी को अपनाने का

अर्थ अंग्रेजी के विरोध से लगाते है। आज अपने ही देश में अपने ही नागरिकों से हिंदी में कार्य करने के लिए निवेदन करना पड़ रहा है ।

हिन्दी भाषा के सामर्थ्य और शक्ति की बात की जाए तो इसे सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा माना जाता है। विश्व के सबसे अग्रणी ज्ञानकोष-एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका द्वारा हिंदी वर्णमाला को वैज्ञानिक कहा गया है और विशेष बात यह है कि ऐसी टिप्पणी किसी और भाषा के लिए नहीं की गई है और इस टिप्पणी पर प्रत्येक भारतीय को गर्व महसूस करना चाहिए। हिंदी भाषा की यह विशेषता है इसके उच्चारण और वर्तनी में कोई अंतर नहीं है और यह पूरी तरह से वैज्ञानिक तथा ध्वन्यात्मक भाषा है।

यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि जिस भाषा से ज्ञान और शिक्षा को संगठित करके रोजगारपरक बना दिया जाता है, वह भाषा तेजी से लोकप्रिय हो जाती है। अगर हम इतिहास पर नजर डाले तो हम पाएंगे कि लार्ड मैकाले ने अंग्रेजी भाषा लागू करते समय इसे अपनाने का कोई निवेदन नहीं किया था, उसने मात्र इस भाषा को रोजगार से जोड़ दिया था और आज स्थिति यह है कि हम भारतीयों की जीविका को अंग्रेजी भाषा के आश्रित बना दिया गया है। आज हिंदी को स्थापित करना है तो उसे निश्चित तौर पर रोजगार से जोड़ना होगा। रोजगार की जरूरत स्वयं ही सब कुछ सिखा देती है, साथ ही सभी प्रकार की नौकरियों में अंग्रेजी के साथ हिंदी भाषा में कार्य करने की योग्यता अनिवार्य की जा सकती है। यह भी देखने में आता है कि जो कुछ हम विद्यार्थी जीवन में सीखते हैं, उसका हमारे रोजगार से कोई संबंध नहीं होता। सभी पाठ्यक्रमों में, चाहे वे व्यवसायिक हो अथवा नहीं, प्रशासकीय/कार्यालयीन तथा व्यवहारिक हिंदी का भी ज्ञान देना चाहिए।

शिक्षा के क्षेत्रा में पाठ्यक्रमों में आज की जरूरतों के हिसाब से बहुत से बदलाव करने की आवश्यकता है। बच्चों को आरंभिक अवस्था से ही हिन्दी सिखाई जानी चाहिए, जबकि आजकल नर्सरी, केजी 1, केजी 2 तक हिन्दी नहीं सिखाई जाती, कक्षा 1 या कक्षा 5 से ही हिन्दी सिखाई जाती है फलस्वरूप बच्चे हिन्दी भाषा से जुड़ नहीं पाते और हिन्दी भाषा के महत्व से अनजान ही रहते हैं। हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि हिन्दी मात्र एक भाषा ही नहीं है, बल्कि हमारी महान संस्कृति और परंपरा की वाहक भी है। शाला में शिक्षा का माध्यम हिंदी भाषा रखा जाए तथा अंग्रेजी एक विषय के रूप में ही पढ़ाई जाने से निश्चित तौर पर इस भाषा का अच्छा विकास होगा। मैंने बहुत से घरों में देखा है जहां उन्हें अच्छे से अंग्रेजी समझ में नहीं आती, किंतु दिखावे के लिए अंग्रेजी पत्रिकाएं खरीदी जाती है और उसका प्रदर्शन किया जाता है। बहुत से लोगों को अंग्रेजी बोलना नहीं आता, इसके बावजूद वे आपस में अंग्रेजी में बात करके स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने की जुगत में लगे रहते है। इसके अलावा हम में से बहुतों का यह भ्रम है कि अगर बच्चों से घर में

हिन्दी में या अपनी मातृभाषा में बात की जाए तो वे पिछड़ जाएंगे या बुद्धु कहलाएंगे। जबकि वैज्ञानिक सर्वेक्षणों में यह पाया गया है कि एक से अधिक भाषा का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की बुद्धि और सीखने की क्षमता का तेजी से विकास होता है और मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करना बच्चों के लिए बाधक नहीं, बल्कि सार्थक सिद्ध होता है।

हमारे देश में अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दिलाने का चलन इसलिए भी चल पड़ा है क्योंकि लोगों को यह लगने लगा है कि अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दिलवा कर ही प्रगति की जा सकती है, इसका एक कारण यह भी है कि उच्च शिक्षा या तकनीकी शिक्षा प्रदान करने वाले अधिकतर संस्थानों में शिक्षा का माध्यम केवल अंग्रेजी माध्यम ही होता है। ग्रामीण तबके के या मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने वाले अधिकांश मेधावी छात्रा केवल इसी कारण उच्च तकनीकी शिक्षा ग्रहण करने से वंचित रह जाते है। इस दिशा में गंभीर और ठोस प्रयास करने की आवश्यकता है। चीन, फ्रांस, तैवान, दक्षिणी कोरिया, जापान जैसे देशों में उच्च शिक्षा उनकी राष्ट्रभाषा में ही दी जाती है। उन देशों में अंग्रेजी की पुस्तकों का देशी भाषा में अनुवाद करके ज्ञान को प्रचारित किया जाता है तथा केवल वे ही विद्यार्थी अंग्रेजी सीखते है, जो शिक्षा ग्रहण करने के लिए इंगलैड, ब्रिटेन, अमेरिका जैसे देश जाना चाहते है। वहां अंग्रेजी भाषा ठीक उसी तरह पढ़ाई जाती है, जिस तरह भारत में जापानी, फ्रैंच या रूसी भाषा सिखाई जाती है। भारत से अंग्रेजी माध्यम से पढ़ कर तथा अंग्रेजी भाषा में कुशलता प्राप्त इंजीनियर कोरिया या फ्रांस के उच्च शिक्षित इंजीनियरों से (जो कि टूटी-फूटी अंग्रेजी ही जानते है) कार, टीवी ,मोबाइल बनाना सीखते है। हमें अपनी हिन्दी भाषा को तकनीक तथा ज्ञानविज्ञान से जोड़ने की भी बहुत आवश्यकता है। इसके साथ ही हमारी नई पीढ़ी हिन्दी भाषा की ओर किस तरह आकर्षित हो, उन्हें इस भाषा में अपनापन तथा सहजता महसूस हो, विरक्ति न हो, यह देखना भी हमारे शिक्षाविदों तथा रोजगार निर्माताओं के लिए अत्यंत जरूरी है ।

हिंदी भाषा का अस्तित्व बचाए रखने की जिम्मेदारी केवल सरकार या संविधान की नहीं, बल्कि प्रत्येक भारतीय की है। हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा-राजभाषा के पद पर सम्मानपूर्वक प्रतिष्ठित करने के लिए आम व्यक्ति की भी भागीदारी आवश्यक है और हमें अपनी भाषा के महत्व को समझने तथा उसके सम्मान को स्थापित करने की दिशा में सार्थक प्रयास करने होंगे।

स्वाति चढ्ढा
हिन्दी अधिकारी
सीएसआईआर- राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे

जनरल जोरावर सिंह - शौर्य गाथा

भारत के महान योद्धाओं की श्रृंखला में एक नाम जनरल जोरावर सिंह का है जिनके अदभ्य साहस और बेजोड़ वीरता का बखान किए बिना जम्मू व कश्मीर के इतिहास को जान पाना संभव नहीं है। भारतीय इतिहास में यह एकमात्र ऐसा योद्धा था जिसने दुनियाँ के सबसे कठिन युद्ध क्षेत्र लेह लद्दाख को लांघकर तिब्बत के मानसरोवर, गिलगित और बाल्टीस्थान तक के दुर्गम क्षेत्रों में अपने युद्धकौशल का परिचय देते हुए अपने देश की ध्वजा को गगनचुम्बी चोटियों पर लहराया था। उस महान योद्धा के जीवन का लघु इतिहास पाठकों के सन्मुख रखने का अल्प प्रयास कर रहा हूँ ताकि इतिहास के धूल-दुसरित पन्नों में दबे पड़े उस महान डोगरा सिपाही की शौर्य गाथा वर्तमान पीड़ी के सामने आ सके।

जन्म

जोरावर सिंह का जन्म आज से 229 वर्ष पूर्व 12 मार्च 1786 को चंद्रवशी राजपूत हरजे सिंह ठाकुर के घर कलहूर गाँव, बिलासपुर, जिला हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश में हुआ था। उनका बचपन का नाम जुहार सिंह था। उनके पिता कहलूर बिलासपुर रियासत के दरबारी थे। गाँव में भूमि विवाद के लिए हुए झगड़े के कारण वह घर छोड़कर हरिद्वार चले गए।

शेर से दो-दो हाथ

किबदंगी के अनुसार एक वार गाँव के पास जंगल में चरती गायों पर शेख ने हमला बोल दिया। चरवाहे शोर मचाते हुए भाग निकले। गायों को संकट में देखकर 13 वर्ष की उम्र का बालक जोरावर उस खूंखार शेर से अकेला भिड़ गया। लगभग आधी गढ़ी के संघर्ष के बाद उस बीर बालक ने खूंखार शेर का वध कर निरीह पशुओं की रक्षा की। उस घटना के बाद जोरावर की ख्याति केवल गाँव में ही नहीं अपितु आस-पास के अन्य क्षेत्रों तक फैल गई।

सेनानायक

अपनी प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण करने के बाद 16 वर्ष की आयु में जोरावर सिंह ने कागड़ा के राजा संसार चंद की सेना में भर्ती होकर कुछ समय तक अपनी सेवा दी तथा बाद में वे लाहौर (आज के पाकिस्तान व भारत में स्थित पंजाब राज्य) के सिक्ख शासक महाराजा रणजीत सिंह की सेना में सिपाही के नाते भर्ती हो गए। सिक्ख सेना में अपनी बहादुरी और तीक्षण बुद्धि के बलपर जोरावरसिंह ने पदोन्नत होकर सेना नायक का पद प्राप्त किया। किन्तु डोगरा नायक को हुक्का पीने की आदत के कारण सिक्ख सेना में विरोध का सामना करना पड़ा। विवाद इतना बढ़ा कि जोरावर को सिक्ख सेना का त्याग करना पड़ा। सिक्ख सेना को छोड़ने के बाद वह जम्मू चले गए। वहाँ पर उन्होंने महाराजा गुलाब सिंह से भेंट की। गुलाब सिंह ने उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उन्हें रियासी क्षेत्र का प्रबंधन सौंपा तथा भीमगढ़ किले का सूबेदार नियुक्त

किया। 1822 ई. में महाराजा गुलाब सिंह ने जोरावर सिंह के व्यक्तित्व तथा कार्य कुशलता से प्रभावित होकर उन्हें किश्तवाड़ का गवर्नर नियुक्त कर वजीर की पदवी प्रदान की। वजीर बनने के बाद जोरावर सिंह ने अपना पूरा ध्यान सेना के प्रशिक्षण पर केन्द्रित किया। उन्होंने अपने जैक स्टेट फोर्सेज का नेतृत्व करते हुए कई महत्वपूर्ण युद्धों में अपनी सेना को विजय दिलाई।

जनरल जोरावर सिंह महान योद्धा, कुशल प्रशासक व साहसी ही नहीं बल्कि धर्म परायण व स्वामीभक्त भी थे। वह दूरदृष्ठा थे उनकी दूरदृष्टि का अनुभव इस बात से लगाया जा सकता है कि उन्हें लगभग 200 वर्ष पूर्व ही उत्तरी सीमा से भारत को खतरे का आभास हो गया था। उन्होंने अपने राज्य की सीमा का विस्तार करने के लिए मैदानी क्षेत्रों की तरफ रुख करने के बजाए दुर्गम भू-भाग की ओर अभियान शुरू किया। अत: किश्तवाड़ के रास्ते आगे बढ़ते हुए सुरू व सोड़ के किलों को अपने अधीन किया फिर छत्रगढ़ लद्दाख आज भारत का हिस्सा है। इस महान सेनानायक ने अपने सैन्य कौशल से लद्दाख, बाल्टिस्तान व सुर्कुद जैसे दुर्गम क्षेत्रों को जीतकर लगभग 70 लाख 30 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को जम्मू कश्मीर रियासत में मिलाया।

लद्दाख विजय

1838 ई. में जनरल जोरावर सिंह अपने चार हजार सैनिकों के साथ 19 हजार फुट ऊंचे ग्लेशियरों को पार करके छह दिन में लेह पहुँचे। उन्होंने अपनी डोगरा सेन्य शक्ति के साथ लद्दाख पर आक्रमण किया तथा 11000 फुट की ऊँचाई पर दुनियाँ के सबसे कठिन युद्ध क्षेत्र में भेड़ की खाल पहनकर जबर्दस्त लड़ाई और विजयश्री का वरन कर लद्दाख क्षेत्र को जम्मू व कश्मीर राज्य में शामिल किया। उन्होंने लद्दाख के राजा ग्लालयो त्सेपाल नामभ्याल से लेह की संधि कर 50 हजार रुपये जुमाना वसूला व वार्षिक कर देने के लिए मजबूत किया। लद्दाख क्षेत्र का प्रबंधन राजा ग्यालसो त्सेपाल नामग्याल को सौंप कर जोरावर सिंह वापिस किश्तवाड़ लौट आए। लौटने के कुछ समय बाद ही सूचना मिली कि लद्दाख में विद्रोह हो गया है। अत: विद्रोह शांत करने के लिए उन्हें पुन: सेना सज्ज कर लद्दाख के लिए प्रयाण करना पड़ा। लद्दाख का विद्रोह शांत कर लिया गया और प्रबंधन पुन: राजा ग्यालसोत्सेपाल नामग्याल को सौंप कर किश्तवाड़ लौट आए। लद्दाख में पुन: विद्रोह हुआ पुन:शांत किया गया। लद्दाख में विद्रोह शांत करने के लिए अनेक वार जनरल जोरावर सिंह को लद्दाख में सेन्य अभियान पर जाना पड़ा। अंत में पाँचवीं वार लद्दाख में विद्रोह शांत करने गए जनरल को आभास हुआ कि वार-वार विद्रोह तिब्बत के शासकों कि शह पर हो रहा है अत: उन्होंने तिब्बत को सबक सीखाने का निर्णय ले लिया।

गिलगित, बाल्टिस्थान व तिब्बत का विजय अभियान

जनरल जोरावर सिंह के सैन्य नेतृत्व में महाराजा गुलाब सिंह के राज्य की सीमाएं मध्य एशिया में काराकोरम तक फैल गई। अति दुर्गम व हिमयुक्त ग्लेशियरों को पार कर गिलगित और बाल्टिस्थान को जीतकर अपने अधीन करने के बाद मई 1841 ई. में जोरावर सिंह ने तिब्बत विजय के लिए अपना अभियान

आरंभ किया। उन्होंने ताशीगोज व हानले को पार करके सडोक व गार को अपने अधीन किया। जोरावर सिंह ने मानसरोवर व रादास्तान के समीप हुए युद्ध में तिब्बतियों को पराजित कर मानतलाई पर विजय ध्वज फहरा दिया। उन्होंने पश्चिमी तिब्बत में कैलास मानसरोवर का पूरा क्षेत्र जीतकर इस देव भूमि को हिन्दू श्रद्धालुओं के लिए सुरक्षित कर दिया था। आस-पास के विभिन्न क्षेत्रों को जीतने के पश्चात एक नए सैन्य अभ्यिान का बीड़ा उठाया। जोरावर सिंह ने 6-7 हजार सैनिक, जिनमें बाल्टी, लद्दाखी, किश्तवारी और डोगरा शामिल थे, को लेकर पश्चिमी तिब्बत के आली क्षेत्र, जिसमें पवित्र कैलास मानसरोवर स्थित है, पर चढ़ाई कर दी। 5 जून, 1981 को रूडोक जीत लिया। फिर गारटोक पर धावा बोला। तिब्बती सेनापति मैदान छोड़कर तकलाकोट की ओर भाग गया। जोरावर सिंह ने उसका पीछा किया और 6 सितम्बर, 1941 को तकलाकोट के दुर्ग पर कब्जा कर लिया। उसके पश्चात् पवित्र कैलास-मानसरोवर के क्षेत्र को जीतकर अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार मानसरोवर झील में स्नान करके श्री कैलास के चरणों में सोने की देव-मूर्ति अर्पित की। जोरावर सिंह ने कई छोटे-छोटे दुर्ग बनवाकर उन पर सैनिक टुकड़ियां बैठाईं। चीथांग में पत्थर का किला बनवाकर कर्नल बस्ती राम को वहां का कमांडर नियुक्त किया। इसके पश्चात् उनकी योजना ल्हासा की तरफ बढ़ने की थी।

वीरगति

15,000 फुट की ऊंचाई पर दिसम्बर मास की भीषण सर्दी और भयंकर हिमपात से बचने के लिए जोरावर सिंह के सैनिकों के पास उपयुक्त वस्त्र आदि नहीं थे। रसद आपूर्ति पूर्णत:अवरुद्ध हो गई थी। इन परिस्थितियों में 12 दिसम्बर, 1841 को चीनी और तिब्बती सेना ने अचानक एक साथ मिलकर आक्रमण कर दिया। जोरावर सिंह ने बड़ी बहादुरी से उनका मुकाबला किया, घायल होने पर भी वीरता से लड़ते रहे। तिब्बती समझते थे कि वह कोई तांत्रिक है और उसके पास कोई दैवी शक्ति है एवं वह साधारण गोली से नहीं मरने वाला। एक किंवदन्ति के अनुसार इसीलिए उन्होंने एक विशेष सोने की गोली बनवाकर एक मकवोन (पटवारी) के घर से चलाई। गोली लगने के बाबजूद वो महान योद्धा 20 से 30 घंटे तक शत्रु सेना से लोहा लेता रहा अपनी अदम्य वीरता का परिचय देते हुए वह तलवार और भाले की नोक पर दुश्मन के छक्के छुड़ाने मे कामयाव हुआ। जिस ओर भी उनके घोड़े ने रुख किया जोरावर के भाले ने शत्रु सेना में त्राहि-त्राहि मचा दी। अंत में लड़ते-लड़ते एक भाला उन्हें पीछे से पीठ पर लगा जिसके आघात से वे घोड़े से गिर पड़े और शत्रुओं ने उन्हें घेर लिया। इस प्रकार शूरवीर जनरल जोरावर सिंह लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हुए। तोयो गांव के कुछ वृद्धों के अनुसार जनरल जोरावर सिंह का एक सेवक उनसे रुष्ट था। तोयो के पास निशस्त्र देखकर उसने जोरावर सिंह का छूरे से मार डाला। जो भी हो, जोरावर सिंह के बाद सब कुछ समाप्त हो गया। जीत हार में बदल गइ।। केवल कर्नल बस्ती राम, जो तोयो के युद्ध में शामिल नहीं थे, 127 सैनिकों के साथ बचकर अल्मोड़ा (उत्तराखंड) पहुंचे, जो बाद में (147-61) जांस्कार के गर्वनर बने।

जोरावर सिंह की वीरता से प्रभावित होकर तिब्बतियों ने तकलाकोट से 4-5 किलोमीटर की दूरी पर

तोयो नामक गांव में व्यू नामक स्थान पर उनकी समाधि बनाई। जिसका नाम ''सिंह शोरटन'' रखा गया। दुनियाँ के इतिहास में जनरल जोरावर सिंह जैसा महान योद्धा अन्य कोई नहीं जिसके अदम्य साहस व वीरता का लोहा मानते हुए शत्रु ने ही स्मारक बनाया हो। यह विश्व के इतिहास का एकमात्र उदाहरण है। उस महान डोगरा योद्धा की अदम्य बहादुरी के कारण ही इन्हें भारत का लिटिल नेपोलियन भी कहा जाता है।

शोक की लहर

जनरल जोरावर सिंह के बलिदान की सूचना महाराजा गुलाब सिंह को पहुँची तो वे शोक से निढाल हो गए। पूरी रियासत में शोक की लहर दौड़ गई। राजकीय शोक की घोषणा की गई। राष्ट्रीय ध्वज को झुका दिया गया। महाराजा शोकाकुल अवस्था में जनरल जोरावर सिंह के परिवार को सांत्वना देने के लिए उनके बसाये गाँव विजयपुर (रियासी) पहुँचे। किन्तु उनके पहुँचने से पहले ही बलिधान गाथा विजयपुर स्थित राजमहल में हो चुकी थी। दोनों रानियाँ आत्मदाह के लिए श्रृंगार कर महल से निकल चुकी थीं। महाराजा गुलाब सिंह ने पहुँचते ही रानियों के चरणों पर सर रख दिया और आत्मदाह के निर्णय का त्याग करने की प्रार्थना की। किन्तु जनरल की बड़ी रानी ने उनके आग्रह को अस्वीकार कर दिया लेकिन छोटी रानी जोकि उस समय गर्ववती को आत्मदाह के त्याग के लिए मना लिया गया। बड़ी रानी के साथ उनकी सेविका ने भी जनरल के अवशेष अपनी गोद में रखकर चन्दन चिता पर आरूढ़ होकर आत्मदाह कर लिया। आज भी बड़ी रानी की समाधी गाँव में उनके महल के पास स्थित है जिस पर उनके वंशजों द्वारा भव्य मंदिर बनवाया गया है जिसमें प्रतिदिन पूजा अर्चना होती है।

छोटी रानी की कोख से जन्म लेने वाले शिशु ने जनरल जोरावर सिंह के वंश को आगे बढ़ाया। आज भी उस महान योद्धा का व्यक्तिगत महल व अन्य अवशेष उनके द्वारा बसाए गए गाँव विजयपुर, रियासी, जम्मू व कश्मीर में विद्यमान हैं। अभी भी जनरल जोरावर सिंह के वंशज इस गाँव में निवास करते हैं और वज़ीर कहलाते हैं। मैं स्वयं को भी बड़ा सौभाग्यशाली मानता हूँ कि हमारे पूर्वज उस महान डोगरा योद्धा के साथ ही हिमाचल प्रदेश से यहाँ आए थे और पुरोहिताई का कार्य करते थे तथा आज भी वह परंपरा कायम है।

उस महान जनरल के वंशजों व अन्य सामाजिक संस्थाओं के अनेक प्रयत्नों से व राज्य प्रशासन की सहायता से रियासी के बस अड्डा पर जनरल जोरावर सिंह कि भव्य प्रतिमा बनवाई गई। प्रत्येक वर्ष 12 मार्च को जनरल जोरावर सिंह का जन्मोत्सव मनाया जाता है। उस दिन बड़ी संख्या में लोग उनकी प्रतिमा के पास एकत्र होकर हवन पूजा में भाग लेते हैं तथा प्रसाद ग्रहण करते हैं।

कुलदीप कुमार शर्मा,
सहायक राजभाषा अधिकारी
सलाल पावर स्टेशन, ज्योतिपुरम्।

कियां जाना पछानुएं कोल

ओषधीय वनस्पतियां
विधा: रूपक
भाषा: डोगरी

पर्दे के पिच्छे, पृष्ठभूमि च, जंगलें दी सां-सां, रुक्ख-बूटें दियां आपूं च गल्लां। (कुआरगंदल-कैसा जुग उठी आया ऐ हर्बल दा। चौन्ने पास्सै इस्सै दा रौला, जेड़ा दिक्खो मेरे गै मगर पेदा ऐ। हां भैने, अऊं बी बड़ा दुखी आं। चनन रुक्ख बोली पौदा ऐ। मेरा ते कुट्टी-कुट्टी ऐ पोह गै कड्डी ओड़ेया ऐ)।

जदुआं दा मनुक्खे ने शरीर धारण कीत्ते दा ऐ अदुआं कोला गै बमारियें भी जन्म लैता हाते इन्दे'शा बचने लेई दवा-दारू भी चली पेआ। शुरू च मनुक्खीजीवन भी जंगली हा ते जंगलें-जाड़ें च उग्गी दिएं बेशुमार जड़ी-बूटियें, रुक्ख-बूटें गी मनुक्ख आपमुआरा गै इस्तेमाल करदा आया ऐ। मनुक्ख गै नेई जीव-जैन्तु भी मान्दे होने पर इन्दा लाऽ ठुआंदे हे। उस बेल्लै दे ऋषि-मुनि इनें बूटियों दी पंछान करने च माह्र होंदे हे ते उन्दे चा किश जेड़े बमारी मताबक इन्दा इस्तेमाल जानदे हे उनंगी बड़ा काबल ते सयाणा मन्नेया जंदा हा। फिर समां बदलेया, इक दुआ जुग अंग्रेजी दवाइयें दा उठी आया। इनें अंग्रेजी दवाइयें दा बमारी पर खासा असर होंदा ते इक रोग ते नस्सदा सेही हुंदा पर कुसैले अपने वक्खरे असर करी दुई बमारी दा कारण बनी जंदियां न। समें ने फ्ही पास परतेआ ते चबक्खी इनें कुदरती ते देसी जड़ी-बूटियें दी इक लैह्र जन चली पेई। सच्चें गै नरुग्ग बनाने आतियां ऐह् जंगली जड़ी-बूटियां बड़ियां उत्तम ते कारगर होंदियां न। अज्जे दे विज्ञान दी नीं स्हाढ़े पराने ज्ञान उप्पर गै टिकी दी ऐ ते वनस्पतिविज्ञान दे मताबक ऐह् वनस्पतियां नेकें लाइलाज बमारियें गी दूर करने च औषध रूप होई जंदियां न।

इक घरै दे अन्दरा दा अवाज .....

'तुलसी महारानी नमोनमः – 2

ठाकुरवरपानी नमोनमः – 2

चेत्तर म्हीनें तुलसी राई मेरे रामा – 2

बसाखै च जन्म लेआ मेरे राम – 2

दरवाजे दी ठक-ठक .....

रानो – लंघी आओ भेने जी! अज्ज बडलै-बडलै कियां औना होआ ?

श्रेष्ठा – तुलसी दे पत्तर लैन आई आं ।

रानो – केह् लोड़ पेई गेई तुलसी दे पत्तरें दी ?

श्रेष्ठा - केह् दस्सां रानो ! लौका जागत कसरी ऐ। तापै ने भन्नी सुट्टेया ऐ उसगी । कम्बी-कम्बी ऐ जागत बतेआ होई जा दा ऐ। इन्दे ननहालै दे ग्रां दे कोई बैद न स्हाढ़े आए दे रातीं दे। उनें गै तुलसी दा काढ़ा जागतै गी देने लेई आखेया ऐ ते कन्ने साढ़े बेदै तुलसी दा बूटा नेई दिक्खिए बड़े रोएं बी होऐ देहे ।

ऐ! रानो तूं होर केह्-केह् ऐ लाए दा इनें गमलें च। बड़े गै शैल ते सन्हाकड़े बूटे न लाए दे तूं । भैन जी, स्हाढ़े इनें गै न आनियै लाए दे । खबरै केह्-केह् लेई औंदे न घाऽ-बूट । रानो दे घरै आले ने अन्दरा दा बाह्र निकलदे होई अपने बरांडे चा परता दित्ता। औं रिसर्च लबाटरी च जड़ी-बूटियें दा मैरहम वज्ञानक आं ते जिसगी एह घाऽ-बूट आखै दी ऐ ऐह् सब्बै बड़ियां करामद वनस्पतियां न। एह् इस गमले च लग्गी दी बूटी जेड़ी तुस दिक्खा दियां ओ ऐ कुआरगंदल ऐ जिसगी ऐलोवीरा आखदे न । एह् सजावटी गै नेई केंइयें बमारिये दी कारगर दवा ऐ। ऐदे इस्तेमाल कन्नै कैंसर ते शूगर जनेहियां बमारियां बी दूर होंदियां न । रसोई च कम्म करदे जेकर कदें हत्थें- बांहीं कुतै सेक लग्गी जा ते न्हाढ़ा रस लाइयै ठन्ड पेई जंदी ऐ ते फलुए बी नेई पौंदे। खून भी साफ करदी ऐ ते चमड़ी लेई बड़ी माफक ए। अऊं ते आक्खना जे ऐदे इस्तेमाल कन्ने बनी दी क्रीम दना तुस भी लाई ऐदा कमाल दिक्खो। चनन दे लेप बारै बी में सुनेया हा मिगी किश चेत्ता आवा द। ऐ-श्रेष्टा ने आखेया ।

एह दुआ बूटा कैदा ऐ ? भैनजी इसदा नां अश्वगंधा ऐ। एह् ऐदा प्रयोग ते पराने समें कोला गै हुंदा आया ऐ ते अज्जे दे नमें शोध थमां बी एदिएं जड़ें च केई ओषधीय गुणे दे सबूत थ्होए न । अज्जे दे इलाज च इसगी कैंसर, गेंठिया, अधरंग ते ब्लड-प्रेशर गी दूर करने लेई माफक पाया गेया ऐ ते इस दे पत्तर चमड़ी दे रोग, सोजिश ते जख्म भरने च कारामदन । ऐरिएं जड़े च निकोटीन, सोम्नीफेरीन, सोम्नीच, विधानीन नां दे अल्कोलाइड ते केई विधानोलाईड्ज होंदे न। ऐदे च मते सारे वातनाशक तत्व भी होंदे न ।

एह कनेही बूटी ऐ ते एह किस कम्म-औंदी ऐ-एह बूटी बड़ी कम्मे दी ऐ ते इसगी ब्राह्मी आखदे न ते न्हाढ़ा वनस्पतिक नां बैकोपा मोनराई ऐ। पैहले भी इसदा प्रयोग बुद्धिवर्धक ओषधि दे रूपै च होंदा हा। ऐदे इलावा कफविकार, पीड़, पाचनतंत्र, प्रजनन संस्थान, चमड़ी ते बुखार जनेह रोगें च बी इस दा प्रयोग होंदा ऐ। अज्जे दे अनुसंधाने च साढ़ी लखनऊ आली लबाटरी सी.डी.आर.आई ने इस ब्राह्मी दे रसैनी तत्वें कन्ने (मेमेरी प्लस) ते मेन्टेट सिरप भी ऐ। बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी ने (मेगामाइन्ड) नां दिएं दवाइयें दा ब्राह्मी ते हर्पेस्टिन नां दे दो योग भौतिक सम्मिश्र शक्ति ते बैकोसाइड 'ए' ते बैकोसाइड : 'बी' नामक सैपोनीन होंदे न।

भैनजी इधर आओ एह दिक्खो एह सदाबहार ऐ तें एह तुसें दिक्खे दा गै होना ऐ । एह थाएं-थाएं अपने-आप बी होई जंदा ऐ। एह बारामासी बूटा भी बड़े गुणें आला ऐ। ऐदे पत्तरे ते फलें च मिलने आले अल्कोलाइड कन्ने कैंसर दे इलाज आस्तै विनक्रिस्टिन ते 'विनबलास्टिन' दवाइयां बनदियां न। जड़ें चा मिलने आले रसप्रिन कन्ने एंटीफाइबलिक दवाई बनदी ऐ ते फुलवैरी च ऐदा दुद्ध बड़ा फायदेमंद होंदा ऐ। एदिएं पत्तिएं, तने, फुल्ल, जड़ ते जड़ें दे सिक्कड़ें च बक्ख-बक्ख मात्रा च अल्कोलाइड होंदा ऐ।

ओह! में ते भुल्ली गेआ जे तुस तुलसी दे पत्तर लैन आइयां हियां। एह तुलसी बी बुखार ते मलेरिए दी

बड़ी कारगर दवा ऐ। तुलसी दे रसे च मच्छर दे विषाणुएं गी तुरंत नष्ट करने दी समर्था होंदी ऐ। मच्छर लड़ी जाने पर ऐदे पत्तरें दा रस लाने कन्ने जलन उसैले शान्त होई जन्दी ऐ अनुसंधाने थमा पता लग्गा ए जे तुलसी दे पत्तरें शा यूजेनॉल नां दा इक द्रव निकलदा ऐ जेड़ा बाऊ गी साफ करने दा कम्म करदा ऐ। न्हाड़े पत्तर, मिंजरां ते डालियां नेकें रोगें च बाड़ेयां कारामद न। ऐदा तेल नेकें दवाइये, मठेआइये इतरें ते सौन्दर्यप्रसाधने च प्रयोग होंदा ऐ। तुलसी दा तेल दवाइयें च इस्तेमाल करी लौंगें दे तेल दा एह इक सस्ता विकल्प भी ऐ की जे न्हाढ़े तेलै च ओह सब्बै गुण मजूद न जेड़े लोंगे दे तेलै च होंदे न ।

श्रेष्ठा - राम राम, श्रीराम, तुलसी दा तेल, इन्ना पाप, स्हाढ़े समाज ते संस्कृति च तुलसी दे बूहटे लेई बड़ी शरधा ते धार्मक आस्था ऐ। **वज्ञानक**-इस्सै करी ते में आखां दां जे हुन वक्त उठी आए दा अपनी सांस्कृतक वरासते अल परतोने दा, अपनी मिट्टी कन्ने इक्क-मिक्क होने दा । भैनजी! तुलसी दा वज्ञानक अधार बी बड़ा पुख्ता ऐ तांइयै ते अनादिकाल थमां गै स्हाढ़े बुजुर्ग धार्मक बूटे दे रूपै च इसगी पूजदे रेह ते बक्ख-बक्ख लोककत्थें राहें तुलसी दी महत्ता दे गुण गांदे नेई हे थकदे ते कन्नै देवी दे रूपै च इसगी अपने बेढ़ै जां मन्दिरें दे आले-दुआले, पनघट पन्यासें ऊपर इस दी स्थापना करिए इसगी पूजदे रेह। देवी-देवता केह न ? दरअसल जिन्दे'शा समाजगी किश हासल होंदा ऐ उयै चीज़ देवी जां देवता हुंदी ऐ। **श्रेष्ठा**-अच्छा! में समझी गेई इनें वनस्पतियें दा स्हाढ़े जीवन कन्ने किन्ना नेड़मा सरबंध ऐ। में चलनी आं गुप्तासाहब होरें नराज होना मिगी चिर लग्गी गेया ऐ।

वज्ञानक-आओ गुप्तासाहब - डॉ. साहब मेरे घरै आली इद्धर आई ही ते सनाऽ दी ही जे तुसेंगी जड़ी-बूटियें बारै बड़ी जानकारी ऐ ते मेरा भी मन कीत्ता तुन्दे न गल्ल-बात करने गी। जरूर! आओ बेई जाओ! डॉ. साहब मन्नी लेआ जे इनें वनस्पतिये च केई वातनाशक तत्व होंदे न । **वज्ञानक**-इन्ना गै नेई गुप्ता साहब ऐह् वनस्पतियां मनुक्खे गी प्राणशक्ति दिन्दियां न। **गुप्ता**-एह ते सब ठीक ऐ पर अज्जै दे समाज च इनें बमारियें दी काट लेई वज्ञानक प्रमाण ते परीक्षण दे राहें गै मुक्ख धारा च आनेया जाई सकदा ऐ। हर्बल चीज़ें दी दुनियां दा बजार बेशक बधा दा ऐ पर इन्दी गुणवत्ता ते उन्दा मानकीकरण भी ते जरूरी ऐ, चकन्ने होने दी भी लोड ऐ। एह वनस्पतियां रसैने दा बेशक बड़ा बड्डा ज़खीरा न पर बक्ख-बक्ख जलवायु आले इलाके च पैदा होने आले केईयें बूटें च रसैनी योग बी बक्ख होई जन्दे न - इस बारै कौन सोचग! अज्ज जंगलें चा सने मुंडे बूटियां पटोआ दीयां न ते ओह उक्किकयां खत्म होआ दियां न, उन्दे थाह्र नमियां भी नेई लग्गा दियां ते इन्दा भविक्ख केह् होडग? इन्दा खात्मा कौन रोकग ते इन्दी पंछान कौन करग? **वज्ञानक**-गुप्ता साहब! तुस ठीक आखा दे ओ इन्दा खात्मा गै रोकना ज़रूरी नेई बल्कि इन्दा वकास ते मानकीकरण, रख-रखाव ते बाद्धा भी बड़ा जरूरी ऐ ते इन्दी गुणवत्ता लेई सोग्गे होने करी गै सी.एस. आई.आर. ने इनें बूटें च मजूद बायोएक्टिव पदार्थे दे वकास ते व्यापारीकरण लेई अपनी प्रयोगशालाएं च इक सांझा कार्यक्रम (परस्पर समन्वयन कार्यक्रम) चलाए दा ऐ ।

''विस्थापन का दर्द''

विस्थापन का दर्द क्या होता है ?
विस्थापन से मैंने क्या खोया ?
जानते हो ?
विस्थापन ने तो मन का चैन-
मन का सुकून -
मन का करार ही छीना है ।
विस्थापन एक बहुत बड़ी विड़म्बना है।
याद आता है मुझे वितस्ता का घाट
जहाँ बचपन में खेला करता था मैं,
पानी में अठखेलियाँ करता था मैं,
'नवरेह' पर नौका विहार करता था मैं।
अब न वह खेलना ही रहा विस्थापन में,
न अठखेलियाँ ही रही और
ना ही वह नौका विहार।
इसे विस्थापन का दर्द न कहें तो क्या कहें ?
याद आता है मुझे कश्मीर का मौसम,
वसन्त ऋतु में खिले फूलों की महक,
शरद् में चिनार से गिरे पत्तों की छटा,
हेमन्त में हिम गण्ड़ित घाटी की छवि।
अब न वह वसन्ती फूल ही रहे विस्थापन में,
न वह चिनार ही रहा और
ना ही हिम की छवि।
इसे विस्थापन का दर्द न कहें
तो क्या कहें ?
याद आता है मुझे कश्मीर का
प्राकृतिक सौन्दर्य
डल झील का वह मनोरम दृश्य,
''नदियों, झरनों की कल-कल करती ध्वनि,
ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों की सुन्दर चोटियाँ।
अब न वह डल झील ही रही विस्थापन में,
न नदियाँ, झरने ही रहे और
ना ही ऊँचे-ऊँचे पहाड़ ।
इसे विस्थापन का दर्द न कहें तो क्या कहें ?
याद आता है मुझे वह नज़ारा 'स्वर्ग' का
पहलगाम की खूबसूरती लिद्दर की धारा,
गुलमर्ग की हरियाली देवदार वृक्षों की छाया,
फूलों व फव्बारों से सजे उपवन ।
अब न वह पहलगाम ही रहा विस्थापन में,
न गुलमर्ग की हरियाली ही रही और
ना ही उस जैसे उपवन।
इसे विस्थापन का दर्द न कहें तो क्या कहें ?

राजेन्द्र कुमार च्रोंगू
65-डी, पटोली मंगोत्रियां,
जानीपुर, जम्मू

आतंकवाद पर हमला

बहुत हुआ जो तुमने किया
बहुत हुआ जो हमने सहा
हमारी शराफत और प्रेम को कमज़ोरी सफझा तुमने
हमारी इन्सानियत को बुज़दिली समझा तुमने
अब जंगे ऐलान हमने कर दिया है
तेरे घर में ही घुस कर, तुझे परेशान कर दिया है
जब तेरे आतंकवादी चैन से सो रहे थे घरों में
हमारे बहादुर कमान्डों उन्हें धौ रहे थे उनके घरों में
ऐसा सोचा भी न था कि ऐसा पलटवार होगा
तेरी सरहद में घुस कर ही तुझे कोई मार देगा
तेरे दरिन्दे जो आतंक यहां थे फैलाते
हमारे जाव़ाज बहादुर उन्हीं के सर कलम कर आते
हमने बोया प्रेम और भाईचारे का बीज
तूमने बोया नफरत और आतंकवाद का बीज
जब कटनी का है समय जो आया
जो हमने बोया था, फिर अच्छी फसल को पाया
तूमने बोया आतंकवाद और आतंकवाद की फसल को पाया
यह मिट्टी है शहीदों और वीरों के बलिदान की
जिन पर हमें है गर्व जो आज
झुकता है हर शीश उनकी याद में
और करते है उन्हें नम्न जो आज
तूमने कितनी हमसे लड़ाईयां लड़ी
मगर हर बार मुँह की खानी पड़ी
फिर किस बात की है अकड़ जो तुझमें
हर बार हमें ललकारता है
तुझे हम मुहतौड़ जवाब जो देते
और हर बार तू हमसे हारता है
फिर भी कहता है खुद को बहादुर
जब बेकसूर लोगों को तू मारता है
मगर याद रख अब बहुत हुआ
जो निर्दोश लोगों का लहू बहा
अब भी सम्भल तो तुझे हम माफ कर देंगे
नहीं समझा अगर तो छट्टी का दूध याद दिला देंगे
है काश जो तुझमें ज़रा सी अकल होती
खुशहाली और उन्नति की पैदावार जो की होती
न खून बहाता किसी का, न ही अपना बहने देता
खुद भी तू शान्ति से रहता
दुसरों को भी शान्ति और प्रेम से रहने देता
मगर तुझे बर्बादी और वहशियत अच्छी लगती है
जिन्दा इंसानों की कीमत तू क्या जाने
उनकी तसवीर दिवारों पर तुझे अच्छी लगती है

तेरे जुल्मों और दरिन्दगी को हमने पहचान लिया है
अपनी शराफत और प्रेम की गलती को हमने मान लिया है
अब कुछ किया अगर तुमने, तो यह याद रखना
तेरा नामों निशान ही मिटा देंगे
दुनिया ढूढ़ती रह जाएगी तुझे नक्शे पर
उस नक्शे को ही हम बदल देंगे
फिर भी हमें वो याद है दिन
जब तू इस देश का हिस्सा था
आज़ादी की लड़ाई हम थे साथ लड़े
और मू भी इसका हिस्सा था
तेरी ज़िद पर हमने था तुझे आज़ाद किया
तू छोटा भाई था अपना
हमने बड़े भाई का अहसास दिया
तेरी गलतियों को नज़र अन्दाज़ जो करते
हमने बड़े भाई का प्यार दिया
आज हम कहाँ है और तू कहाँ है
भारत चमक रहा है पर तेरी शखसियत कहाँ है
आज भारतवासी हर किसी से प्यार है करता
एक कदम जो प्यार है करता
हम दस कदंम बढ़ाएगें
मगर जो ललकारे हमारी खुददारी को
उस दुश्मन को अब हम उसके
घर में ही मारकर आयेंगे
उस दुश्मन .....
जय हिन्द!

जॉनसन गिल
यातायात अधिकारी
एअर इंडिया, जम्मू

योग और मानव जीवन

मानसिक रूपेण असंतुलित व्यक्ति कुविचार, कुकर्म, भ्रष्टाचार, आतंकवाद जैसी तुच्छ, हेय, जघन्य एवं कुत्सित भावनाओं से ग्रस्त होते हैं। स्वस्थ एवं स्वच्छ समाज तथा राष्ट्र के लिए स्वच्छ चित्त वाला मनुष्य हितकर एवं अभीष्ट होता है और वह योगानिष्ठ व्यक्ति ही हो सकता है। आनन्दपूर्ण योगी ही आनन्ददायक होता है (तैत्तिरीयोपनिषद्, 2/7 'रसो वै सः' रस ह्येव लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति) आनन्दमय जीवन वाले नीरोग व्यक्ति द्वारा समाज एवं राष्ट्र का कल्याण संभव है और योग के अनुसरण मात्र से ही आध्यात्मलाभ होता है, मानसिक शान्ति उपलब्ध होती है, बल एवं वीर्य का वार्धक्य होता है तेजस्वी एवं सौन्दर्यपूर्ण अङ्ग.यष्टि की निर्मित्त होती है, बल एवं वीर्य का वार्धक्य होता है जिससे जीवन आनन्द से ओतप्रोत हो जाता है। प्रत्येक दर्शन का ध्येय मानवसुख की प्राप्ति एवं दुःख की निवृत्ति है। यह सुख आत्मसाक्षात्कार के रूप में उपलब्ध हो सकता है। योगदर्शनसम्मत योग आत्म-परमात्म के सायुज्य को तो करवाता ही है परन्तु इसके साथ ही साथ तत्व साक्षात्कार एवं स्वास्थ्यलाभ भी करवाता है। इसीलिए योग की महत्ता, उपादेयता, उपयोगिता एवं व्यावहारिकता आधुनिक युग में भी उतनी ही ग्राह्य है जितनी कि योगप्रतिष्ठापकों को प्राचीन युग में स्वीकार्य थी।

परम योगवेत्ता याज्ञवल्क्य अपनी स्मृति में योग का तात्पर्य 'समतावस्था' से लेते है जिसका आशय है जीवात्मा का परमात्मरूप से परिनिष्ठित हो जाना न कि दो सत्ताओं का परस्पर भिन्न-भिन्न रूप में समरूपेण प्रतिभासित होना। कहने का भाव यह है कि जीवात्मा की ब्रह्मरूप में अवस्थिति जब हो जाती है उसी को समतावस्था अथवा समाधि की संज्ञा प्रदान की जाती है (याज्ञवल्क्य स्मृति समाधिः समतावस्था जीवात्मपरमात्मनोः। ब्रह्मण्येव स्थितियां सा समाधिः प्रत्यगात्मनः)

पाणिनि युज् धातु को समाधि के अर्थ में मान्यता देते हुए कहते हैं युज् समाधौ (धातुपाठ, दिवादिगण 71, आत्मनेपद)। समाधियोगसमाधिः का उद्घोष उपलब्ध होता है। (पातञ्जल योगसूत्र व्यासभाष्य।)

परम साम्यवस्था का तथ्य मुण्डकोपनिषद् में उद्घाटित है निरञ्जनः परमं साम्त्यमुपैति (मुण्डकोपनिषद् 3/1/3)। बुद्धि आदि कल्पित उपाधियों से युक्त धर्मो को छोड़कर स्वाभाविक अनासक्ति के रूप में जीव की परमात्मा की तरह अवस्थिति हो जाती है। चित्त सम्यग् रूपेण आक्षिप्त हो जाता है अथवा समत्वबुद्धि हो जाती है। गीता भी समत्व को योग की संज्ञा देती है और कहती है 'समत्वं योग उच्यते' (गीता 2/48) समाधि चित्त का सर्वोपरि धर्म है और यह क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध चित्त की पांचों में से किसी भी भूमि में संभावित है। प्रथम तीन अवस्थाओं में चित्त से विक्षेप की स्थिति बने रहने के कारण असंप्रज्ञात या एकाग्रभाव इष्ट है तथा निरुद्ध की स्थिति अर्थात् असंप्रज्ञात अवस्था ही योग के लिए अभीष्ट है क्योंकि उसमें सत् स्वरूप वाले अर्थ की अभिव्यक्ति होती है, अविद्या-अस्मिता-राग-द्वेष अभिनिवेशरूप क्लेशों की पूर्णतया निवृत्ति होती है, शुभ एवं अशुभ कर्मो का शैथिल्य सम्पन्न होता है तथा आत्मस्वरूप की अनुभूति होती है। 'अयमेव परमो धर्मः यद् योगेन आत्मदर्शनम्' (याज्ञवल्क्य स्मृति) कहकर याज्ञवल्क्य स्मृति का उद्घोष करती है कि योग के द्वारा आत्मदर्शन होता है और यही योग का परम धर्म है। योग की प्राप्ति एवं अप्राप्ति से चित्त का महत्वपूर्ण स्थान है चित्तमेव

संसार: (मैत्रेयी उपनिषद्) कहकर इस बात का समर्थन मैत्रेयी उपनिषद् करता है और 'मन एवं मनुष्याणाम् कारणं बंधमोक्षयो:' कहकर गीता उपर्युक्त मंतव्य का पोषण करती है। वस्तुत: चित्त एक ऐसी नदी है जोकि कल्याण एवं पाप द्विविध गति के स्वभाव वाली है। जब यह विवेक विषय की ओर प्रवाहित होने लगती है तब कैवल्यलाभ में सहायक होने के कारण कल्याणवहा रूप में प्रकट होती है और जब अविवेकविषय की ओर प्रवहन करती है तो संसरण अर्थात् आवागमन की मूलभूत होकर पापवहा बन जाती है। (चित्तनदी नाम उभयतोवाहिनी वहति कल्याणाय वहति पापाय च'-पातंजल योगसूत्र व्यास भाष्य 1/12)

चित्त की प्रमाण-विपर्यय-विकल्प-निद्रा-स्मृति-इन पांच वृत्तियों का निरोध पातञ्जलयोगसूत्र का 'योग' है। (योगश्चचित्तवृत्तिनिरोध:- पातञ्जल योगसूत्र 1/2) यम-नियम-आसन-प्राणायाम-प्रत्याहार-धारणा-ध्यान और समाधि योग के आठ अङ्ग. है। प्रथम पांच बहिरंग साधन है जबकि अंतिम तीन अन्तरंग साधन हैं। व्याधि-स्त्यान-संशय-प्रमाद-आलस्य-विरति-भ्रांतिदर्शन-अलब्धभूमिकत्व-अनवस्थिति योग के नवमल अर्थात् विघ्न माने जाते है। योग की प्राप्ति के लिए चित्त की शुद्धि एवं स्वच्छतारूप प्रसादनता अत्यन्त अनिवार्य है। प्रकाशरूप अर्थात् प्रख्यातरूप है तथापि प्रकृति का परिणाम या विकार होने के कारण त्रिगुणात्मक होता है, प्रख्याशील होता है एवं स्थितिशील है (योगसूत्र, व्यासभाष्य 1/2 प्रख्यातरूपं हि चित्त सत्तं, चित्तं हि प्रख्याप्रवृत्तिस्थितिशीलत्वान् त्रिगुणम्)। जिस प्रकार स्फटिकमणि स्वेतर नीलरक्तादि वस्तुओं के संसर्ग में तद्रूप भासित होती है वैसे ही चित्तरूपी दर्पण में प्रतिबिम्बिता पुरुष नील सुखादि वस्तुओं के संसर्ग में तद्रूप सीमित ज्ञान वाला होता है जबकि वस्तुत: वह उससे भिन्न होता है। इस सत्य के ज्ञान के लिए 'योग' परम सहाय है, उपयोगी है। ईश्वर की भक्ति से भी अधिक सुलभ योग है (ईश्वर-प्रणिधानाद्वा- पातञ्जलयोगसूत्र 1/23) वीतराग चित्त, स्वप्न निद्राज्ञान आलम्बन, विशोका ज्योतिष्मती प्रज्ञोदयादि सहित यथाभिमतध्यान से भी चित्त स्थितपद अर्थात् कैवल्य को प्राप्त करता है। (योगसूत्र, व्यासभाष्य 1/39)।

योग की प्राप्ति के लिए मन की शुद्धि, निर्मलता, स्वच्छता तथा नियंत्रण अपेक्षित है, वांछित है, काम्य है क्योंकि यही आत्मेश्वर की प्राप्ति में बाधक अथवा साधक की भूमिका अभिनीत करता है।

योग शब्द का मूल अर्थ आत्म साक्षात्परक है। इसके अतिरिक्त इस शब्द का प्रयोग नादयोग, सुरति शब्दयोग, भक्तियोग, कुण्डलिनी योग, ज्ञानयोग, कर्मयोग मन्त्रयोग, तन्त्रयोग, प्रणवयोग, प्राणयोग आदि बहुविध अर्थो में प्रयुक्त होता है। योग शब्द का प्रयोग किसी भी अर्थ में हो सकता है परन्तु इसका ध्येय, इसका लक्ष्य एक ही रहता है और वह है 'आत्मसिद्धि'। आधुनिक युग में योग शब्द का प्रयुक्तिकरण आसनयोग के अर्थ में विशेषरूप से ही रहा है। शरीर एवं इसके अंगों के विविध विन्यास द्वारा रोगनिवृत्ति, स्वास्थ्यप्राप्ति, मानसिक शक्ति आदि के रूप में महनीय उपादेयता सर्वग्राह्य है।

डॉ. रमा शार्मा
हिन्दी अधिकारी
भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

व्यापार में हिन्दी का योगदान

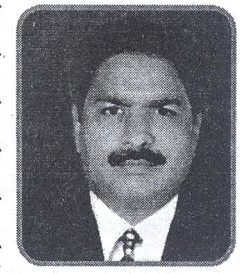

किसी भी देश की तरक्की के पीछे उसकी संस्कृति और भाषा का बहुत बड़ा योगदान होता है जो न केवल उसकी प्रगति बल्कि अर्थ व्यवस्था में भी बहुत बड़ा योगदान साबित होता है। आज के युग में जहाँ व्यापार के लाभ हेतु तरह-तरह के प्रयोग और तरीके अपनाये जा रहे हैं और नया रंग रूप दिया जा रहा है वही आज व्यापार में हमारी अपनी भाषा हिन्दी का भी बहुत बड़ा योगदान है इसमें कोई शक नहीं है कि अंग्रेजी भाषा भी इसमें अपना योगदान दे रही है मगर एक शहर से गाँव तक असाधारण मनुष्य से साधारण मनुष्य तक इसका इस्तेमाल बराबर और लगातार होता चला आ रहा है। जिसे पढ़ा लिखा व्यक्ति तो अवश्य समझ पाएगा ही मगर कम पढ़ा लिखा जो केवल हिन्दी ही जानता हो अपनी बात को बड़े सरल तरीके से दूसरों से पहुँच सकता है आज भारत देश में सबसे बड़े व्यापार में योगदान हेतु कई उदाहरण दिए जा सकते हैं।

व्यापार के मुख्य केन्द्र बिन्दुः-

मनोरंजन / सिनेमा -

एक बहुत बड़ा व्यापार है और हम कह सकते हैं कि इसमें फिल्मों का बहुत बड़ा योगदान है जिसमें हमारी अपनी भाषा हिन्दी का एक विशेष स्थान है। जिसमें कहानी संवाद और गीत हर एक चीज हिन्दी में कही जाती है और सुनी जाती है और इसमें करोड़ों रूपयों का व्यापार होता है। अभिनेता जा शायद अपने व्यक्तिगत जीवन में शायद हिन्दी का कम प्रयोग करते रहे हों मगर एक फिल्म को हिट करवाने के लिए उन्हें हिन्दी में ही सब कुछ कहना पड़ता है। हिन्दी न आने को भी सीखने की जरूरत पड़ती है जिससे न केवल उनका अपना व्यवसाय बल्कि उसके जुड़े तमाम लोगों की रोजी-रोटी भी चलती है और केवल यही नहीं सरकार को भी इसके टैक्स द्वारा करोड़ों रूपयों का मुनाफा होता है।

इलेक्ट्रोनिक मीडिया -

आज टी.वी. बाज़ार भी एक व्यवसाय बन गया है अगर देखा जाए तो ज्यादातर कार्यक्रम हिन्दी में ही दिखाए जाते हैं जैसे-बड़े-बड़े शो, नाटक, गीत-संगीत, समाचार, कार्टून कार्यक्रम और विदेशी कार्यक्रम जो अंग्रेजी भाषा में होते है उसका अनुवाद हिन्दी भाषा में करके दिखाया जाता है। लोगों की रूचि को ध्यान में रखकर और हमारी हिन्दी भाषा को दूसरे देशों के गन माननीय व्यक्ति भी कुछ शब्द चाहे हिन्दी में बोलते हों मगर उनके द्वारा हिन्दी को ही प्रोत्साहन मिलता है और उस भाषा के प्रति अपना सम्मान देते हैं। इससे भी हिन्दी के योगदान को व्यापार के रूप में देखा जाता है। औरतों, बुजुर्गो, छोटे बच्चों के लिए भी कार्यक्रम हिन्दी में तैयार किए जाते हैं आज बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ और दुकानों पर भी हिन्दी भाषा में ही ग्राहक को चाहे वो कम पढ़ा लिखा हो मगर हिन्दी के प्रयोग द्वारा उन तक पहुँचा जा सकता है।

आज देखा जाए तो व्यापारी वर्ग भारत देश में ज्यादा से ज्यादा हिन्दी भाषा का ही प्रयोग अपने व्यापार द्वारा करते है और कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा का एक राष्ट्र की प्रगति में बहुत बड़ा योगदान है आज अगर कहीं राष्ट्रगान की बात चलती है तो संसार भर में हिन्दी राष्ट्रगान को एक ऊँचा स्थान दिया जाता है। आज तो बड़ी वस्तुओं पर भी हिन्दी में लिखा जाता है जो अनिवार्य हो गया है और आप की शिकायत का उत्तर आपकी भाषा में ही प्राप्त हो जाता है।

इंटरनेट - मोबाइल -

मोबाइल भी आज व्यापार में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है और कह सकते हैं ज्यादातर लोग अपनी बात अपनी ही भाषा में प्रयोग करते हैं और छोटे-छोटे दुकानदार भी अपनी बात को बड़े ही साधारण तरीके से दूसरों तक पहुँचा सकते हैं चाहे व्यापार की बात हो, घरेलू या शिक्षा से संबधित हो। आज मोबाइल पर फेसबुक, वडसऐप का भी बहुत प्रयोग है और जिसमें बहुत सारी हिन्दी में ही बातें होती हैं चाहे व्यापार की हो, शुभ संदेश वगैरा-वगैरा।

सेहत सम्बंधित (दवाईयाँ) -

सेहत सम्बन्धित दवाईयाँ भी आज हिन्दी लेबल लगाकर बेची जाती हैं जिस तक आम आदमी की पहुँच बड़ी ही आसानी से हो जाती है और इसकों दूसरों पर निर्भर होने की वजह खुद ही पता चल जाता है और इसके व्यापार में बहुत ही वृद्धि होती है जो कि व्यापार का एक अहम हिस्सा है।

यात्रा सम्बन्धित -

आज देखें तो विभिन्न प्रकार की यात्रा सुविधाओं में हिन्दी का एक विशेष योगदान है जैसे हवाई यात्रा, रेलगाड़ी, बसों में भी हिन्दी भाषा का बहुत बड़ा योगदान होता है जिससे यात्रियों को सुविधाएं तो होती ही है मगर उसके साथ-साथ उसके व्यवसाय में बहुत बड़ा योगदान होता है। आज जो हवाई जहाज में भी घोषनाएं हिन्दी भाषा में की जाती है जो लोगों पर एक विशेष प्रभाव छोड़ती है।

भारत देश -

भारत देश आज विश्व में सबसे बड़ा व्यापार का केन्द्र बन गया है जहाँ हर कोई अपनी पुंजी लगाना चाहता है और लाभ अर्जित करना चाहता है चाहे स्वदेशी या विदेशी हो। क्योंकि जिसके पास रूपया है उनके पास ताकत है जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। यही कारण है कि आज भारत में आज निवेश करने के लिए बड़ी-बड़ी मलटीनेशनल कम्पनियों की भी पसंद भारत देश बनता जा रहा है और आज बड़ी-बड़ी कम्पनियां भारत देश की ओर नजरें लगाए हुए है चाहे वो किसी भी क्षेत्र को देख लें। क्योंकि इसकी राष्ट्रभाषा हिन्दी है और यहाँ इसका सबसे ज्यादा प्रचार और प्रसार होता है और यहाँ के नागरिक ज्यादा से ज्यादा हिन्दी ही का प्रयोग करते हैं। इसलिए हर कोई अपने सामान को उन तक पहुँचाना चाहता है। आज तो लोग शहर से गाँव की ओर चल पड़े हैं। क्योंकि

हिन्दी भाषा को जानने वाले अधिक हैं और इसका ज्यादा से ज्यादा प्रसार और प्रचार भी हिन्दी में हो रहा है और व्यापार में हिन्दी का बहुत ज्यादा योगदान दिखाई दे रहा है और विदेशी कम्पनियां भी इस बात से वाकिफ हैं उन्हें अगर अपने व्यापार को भारत देश में फैलाना और बढ़ाना है तो हिन्दी भाषा की ओर ध्यान देना होगा ताकि उनके सामान की अधिक से अधिक बिक्री हो सके और लोग उन्हें अपनी कम्पनी समझ सकें जो उनसे अपनी ही भाषा में बात करती है। इसका सबसे ज्यादा प्रभाव दूसरे देशों पर भी पड़ रहा है जो भारत में निवेश करना चाहते हैं। स्थाई स्थान चाहते हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण जापान की सजूकी गाड़ियाँ बनाने की कम्पनी है जिन्हें विदेशों में सजूकी के नाम से जाना जाता है और भारत देश में मारूती सजूकी के नाम से जाना जाता है। और आज जिसकी सबसे अधिक बिक्री होती है और भारत द्वारा भी दूसरे देशों को भी मारूती के नाम से बेचा जाता है जिससे व्यापार में बहुत ही बढ़ोत्तरी हुई है।

पतंजलि (सामान) बाजार –

आज बाबा रामदेव ही पतंजलि कम्पनी न सिर्फ भारत में बल्कि विदेशों में भी एक ब्राण्ड बन चुकी है और इसकी हर प्रकार की बस्तुएँ बेची जाती है। चाहे वो खाने की हो सेहत सम्बन्धित हो। और जैसाकि बताया गया है उसका मुनाफा 5000 से हुआ है और आने वाले वर्षो में 10,000 करोड़ का लक्ष्य रखा गया है जो कि व्यापार में हिन्दी में लिखे होने के कारण एक बहुत बड़े योगदान के रूप में देखा जा रहा है।

योग –

आज योग शिक्षा भी लोगों के लिए एक व्यवसाय बन चुका है जिसे लोग देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अपना रहे हैं और लोकप्रियता पूरे विश्व में फैल रही है और इससे सेहत के प्रति भी लोग जागरूक हो रहे हैं आज अहुत ही गर्व के साथ कहना पड़ता है कि यूनाईटड नेशन ने तो इसे पूरे विश्व में योगदिवस के रूप में मनाने का संकल्प लिया है और इसकी शुरूआत भी इस साल से हो चुकी है जो कि भारत देश के लिए गर्व और एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

खादी भण्डार –

खादी कपड़ों की भी पहचान हिन्दी भाषा के सम्मान के रूप देखी जाती है और इसका व्यवसाय भी हिन्दी के योगदान की वजह से फलफूल रहा है जो न केवल भारत के बल्कि विदेशों में भी अपनी पहचान छोड़ रहा है। जिसे लोग अपनी भाषा का सम्मान समझते हैं और गर्व से इसका इस्तेमाल करते हैं।

समचार पत्र / हिन्दी किताबें / मैगज़ीन / परीक्षा आदि –

आज समाचार पत्र एक ऐसा माध्यम है जिसमें देश-विदेश की घटना, शिक्षा, सेहत, टेकनॉलजी, राजनीति, मनोरंजन, अर्थव्यवस्था के बारे में समाचार पड़े जा सकते हैं और विशेषकर हिन्दी समाचार पत्र भी अधिक संख्या में देखे जाते हैं जिससे व्यापार मे काफी वृद्धि हो रही है और

इसमें विज्ञापन वगैरा से भी सामान आसानी से बेचा जा सकता है। हिन्दी किताबों, मैगज़ीन, पत्रिका द्वारा भी व्यापार में वृद्धि होती है।

हिन्दी एक व्यवसाय –

आज हिन्दी को न केवल भारत देश में बल्कि विदेशों में भी लोग पढ़ने-लिखने और सीखने और व्यवसाय के रूप में ले रहे हैं और आज हिन्दी दूसरे देशों में एक विशेष स्थान हासिल कर चुकी है और पढ़ाई जा रही है और लोग उस कारोबार के रूप में भी देख रहे हैं। भारत देश में जैसे युनिवर्सिटी, स्कूल और कॉलेज में भी हिन्दी शत-प्रतिशत पढ़ाई जा रही है। आज तकरीबन बड़े-बड़े राज्यों जैसे - उत्तर-प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ में तो करीब हिन्दी में ही सारा काम हो रहा है और हिन्दी यहां पर शत-प्रतिशत बुलंदियों पर है। जैसे - स्कूल, विद्यालय, कॉलेज और सरकारी नौकरी में भी सारा काम, परीक्षा हिन्दी में ही अनिवार्य है, और कारोबार, व्यवसाय भी हिन्दी भाषा ही इसका मुख्य माध्यम है। विद्यार्थियों को किताबों द्वारा जो हिन्दी में लिखी जाती है, कारोबार होता है।

दूसरे देशों से व्यापार –

अगर दूसरे देशों की बात करें तो पड़ोसी देशों में भी हिन्दी का अपना एक विशेष स्थान है और हिन्दी के बढ़ावे हेतु प्रयास किए जा रहे हैं चाहे किसी भी क्षेत्र में हो विशेषकर व्यवसाय में जैसे - पड़ोसी देश, चीन से भारत देश में बहुत बड़ा व्यापार का केन्द्र बन चुका है और वहाँ का सामान भारत देश में बेचा जा रहा है और हिन्दी की अहमियत जानते हुए वो भी हिन्दी भाषा में लिखित वस्तुओं को भेज और बेच रहे हैं और यह जानते हुए कि हिन्दी में लिखे बिना यहाँ सामान की प्रगति नहीं हो सकती और हिन्दी भाषा को ही साथ लेकर चलना है और जिससे व्यापार में भी बहुत बड़ा योगदान हो रहा है।

सो आज हिन्दी भाषा दूसरी भाषाओं के लिए चुनौती नहीं बल्कि अपनी एक खास पहचान बनाकर व्यापार में उसके बढ़ावे हेतु अपना योगदान दे रही है। और आज कारोबार और व्यापार नई बुलंदियों को छू रहा है जिसमें सरकार का भी बहुत बड़ा योगदान है जिसके अन्तर्गत मंत्रालय भी इस पर खास ध्यान दिए हुए हैं और सरकार द्वारा भी इसके प्रसार और प्रचार के लिए बड़े प्रयास किए जा रहे हैं। और आज भारत देश विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए है और हिन्दी भाषा व्यापार में भी बहुत बड़ा योगदान दे रही है और इसका एक अहम हिस्सा बन चुकी है।

जॉनसन गिल,
यातायात अधिकारी,
एअर इंडिया लि., जम्मू

वैदिक नारी के विविध रूप

नारी विधाता की सबसे विलक्षण कृति और सर्वोत्तम सृष्टि है। समस्त राष्ट्र की आधार है। सकल मानवीय सृष्टि उसकी कोख से न केवल जन्म लेती है बल्कि उसके ममतामय पवित्र आँचल में पल बढ़कर अपनी पहचान भी प्राप्त करती है। अपनी मधुर लोरियाँ सुना कर नारी ही समस्त संसार को स्वर्गमय बनाने का महान् उत्तारायित्व वहन करती है। वेद में भी नारी जाति का अत्युत्कृष्ट व्याख्यान है। परिवार, समाज, राजनीति, युद्ध, ज्ञान विज्ञान आदि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र और प्रत्येक रूप में -

'अहं केतुरहं मूर्धा अहम् उग्रा विवाचिनी।
ममेदनु क्रतुं पतिः सेहानाया उपाचरेत्।।'

कहकर नारी अपनी विजय पताका फहराती हुई अपने महिमामय ओजस्वी रूप के साथ द्योतमान होती है।

नारी की प्राथमिक भूमिका परिवार निर्माण की है। परिवार में वह आदर्श पुत्री, आदर्श बहन, आदर्श पत्नी, आदर्श गृहिणी और आदर्श माँ के रूप में वर्णित है।

माँ सन्तान की प्रथम गुरू है। वह सन्तान के उत्पन्न होने से पूर्व गर्भ से ही उसे सुसंस्कृत और शिक्षित करने की क्षमता रखती है। जन्म के पश्चात् शुद्ध उच्चारण के साथ-साथ बालक को सुसंस्कारित भी करती जाती है। अतः कन्या के रूप में उसकी शिक्षा पर वेद मे विशेष वर्णन है-

ऋग्वेद के दशम मण्डल का 85वाँ सूक्त सूर्या विवाह सूक्त है जिसमें सूर्या का सोम के साथ विवाह का बड़ा सुन्दर आलङ्कारिक वर्णन है। इसमें बताया गया है कि सूर्या के साथ विदाई में दहेज भी गया। वेद में बताया गया है कि वह दहेज कौन सा था? -

रैभ्यासीदनुदेयी नाराशंसी न्योचनी।
सूर्याया भद्रमिद्वासो गाथयैति परिष्कृतम् ।।

अर्थात् सूर्या के विवाह के समय रैभी अर्थात् अग्निविशयक ऋचायें सूर्या के साथ गई जो उसकी सखीरूपा थीं। नाराशंसी स्तुतिपरक ऋचायें उसकी सेविका बन कर गई। सूर्या का सुन्दर परिधान वेदमन्त्रों के गायन से सुशोभित हुआ।

चित्तिरा उपबर्हणं चक्षुरा अभ्य.जनम्।

चित्तिः त्र ज्ञान सूर्या का, उपबर्हणं त्र बिस्तर बना, चक्षुः त्र ज्ञान का प्रकाश ही उसका, अभ्य. जनम् त्र काजल बना।

स्तोमा आसन् प्रतिधयः कुरीरं छन्द ओपशः।

सूर्या जिस रथ पर सवार होकर चली उसे प्रतिधयः त्र डण्डे स्तोभ त्र मन्त्र थे। कुरीरम् त्र रथ का उपरिभाग छन्द थे।

ऋक्सामाभ्यामभिहितौ गावौ ते सामनावितः।।

ऋग्वेद और सामवेद के मन्त्रों द्वारा प्रेरित हुए रथ के दोनों बैल संगीतमय होकर चले। इस प्रकार सूर्या विवाह सूक्त के सभी मन्त्र स्पष्ट संकेत करते है कि विवाह से पूर्व कन्या का वेदविद्या आदि से सुशिक्षित होना अत्यावश्यक है। विदुषी नारी ही ज्ञान विज्ञान की शिक्षा से शिक्षित होकर जगत् में अज्ञान और दुष्ट विचारों को ज्ञान सागर में डुबोकर नष्ट करती है। यह ज्ञान ही वधू का वास्तविक दहेज होता है।

'वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्याभिमा बहयचास्तन्वो वीतपृष्ठा' (यजुर्वेद)

अर्थात् ऐसी विदुषी पवित्र उत्तम देवियाँ ही समस्त ऐश्वर्य उपलब्ध कराती हैं।

अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वति।
अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि।।

उच्चकोटि की अध्यापिका, कुशल उपदेशिका, अतिशय विदुषी माँ अपने सदुपदेशों से हमारे अप्रशस्त मार्गों को प्रशस्त बनाए क्योंकि -

त्वे विशा सरस्वती श्रितांयूषि देव्याम्।

हे विदुषि नारी! तुझ पर ही सब जीवन आश्रित है। ऐसी विदुषी नारी जब पत्नी बनकर पतिगृह में आती है तो वह सुमंगली कहलाती है - 'सुमंगलीरियं वधूः - ऋक् 10/85/53 और पति उससे कहता है - 'गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तम्' ऋक् 10/85/36 मैं तेरा हाथ अपने घर में सौभाग्य की वृद्धि के लिए ग्रंहण करता हूँ यही वधू सौम्यनयनों वाली, पति को किसी भी प्रकार का कश्ट न देती हुई पशुओं के लिए भी कल्याणकारिणी बनती है। यही नारी अपने पतिगृह में जाकर अपने गुणों से सास-ससुर, देवर, ननद आदि के मध्य साम्राज्ञी बनती है। ऋक् 10/85/44,46 वेद में नारी के लिए एक बहुत सुन्दर विशेषण प्रयुक्त हुआ है, वह है सिनीवाली।

सिनीवालि पृथुश्टुके या देवानामसि स्वसा।
जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि दिदिड्ढि नः।। (यजुर्वेद)

निरुक्तकार ने सिनीवाली की निरुक्ति इस प्रकार की है - 'सिनमन्नं भवति सिनाति भूतानि वालं पर्व वृणोतेः तस्मिनन्नवती' अर्थात् 'सिन' का अर्थ अन्न है क्योंकि वह प्राणियों को बांधता है। वाल का अर्थ उत्सव है। उत्सवों आदि में प्रशस्त भोजन बनाने वाली नारी सिनीवाली कहलाती है। शतपथब्राह्मण में भी कहा है - 'योषा वै सिनीवाली'।

यजुर्वेद में कहा गया है -

सिनीवाली सुकपर्दा सुकुरीरा स्वौपशा।
सा तुभ्यमदिते मह्योरवां दधातु हस्तयोः।।

अन्नपूर्णा, अच्छे केशों वाली, श्रेष्ठ कर्म करने वाली स्वौपशा = स्वदिष्ट भोजन बनाने वाली नारी अपने हाथों से दाल आदि बनाने वाली बटलोई धारण करे।

अथर्ववेद में भी नारी के लिए सिनीवाली विशेषण प्रयुक्त करते हुए उसके प्रति आदर और सम्मान करने का आदेश है।

यजुर्वेद 8/42 में कहा गया है - 'हे महिमामयी देवि! कलशों को भरने के लिए तुझे दूध, घी, शहद आदि प्राप्त हों। एक बार समाप्त होने पर पुनः इसे अन्नादि से भर दो और सहस्र धाराओं में सबको दुग्ध पान कराओ।

वस्तुतः नारी ही गृहस्थाश्रम में अपनी सूझबूझ गृहकुशलता और मितव्ययता से ऐश्वर्य की वृद्धि करती है अतः वह सिनीवाली अन्नपूर्णा कहलाती है।

नारी की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका माता के रूप में है। यह नारी का महान् सौभाग्य और गौरव का विषय है कि विधाता ने सन्तानोत्पादन और निर्माण का महान् उत्तरदायित्व नारी को सौंपा और उसे वह विलक्षण क्षमता प्रदान की जिसे प्राप्त कर नारी ने अपनी सन्तान को जैसा चाहा वैसा बना दिया।

ऋग्वेद 8/18/4 में कहा है कि हे अदिति देवी रूपा माँ! अक्षय रूप से भरणपोषण करने वाली, अतिशय प्रिय, विद्वान्, उत्तम सुख देने वाली, दिव्यगुणयुक्त पुत्रों के साथ आओ। 10/47/2,3,4,5 में माँ से प्रार्थना की गई है कि तुम ऐसी सन्तान प्रदान करो जो शास्त्रास्त्र चलाने में, युद्धविद्या में और ज्ञान विज्ञान में पारंगत हो। ज्येष्ठ जनों का पूजक अन्न, धन, बल का संग्राहक, विप्र, वीर और नेतृत्व की अपार क्षमता आदि से युक्त हो।

यजुर्वेद के 35/21 तथा 12/15 में बताया गया है कि माता साक्षात् पृथिवी है। उसकी अनृक्षरा निवेशनी = शीतल मधुर छाँव में मनुष्य के सभी सन्ताप, कष्ट, पाप और शोक समाप्त हो जाते हैं। अन्तरस्यां शुक्रज्योतिः विभाहि = और फिर वह माँ की शुद्ध ज्योति से संसार में चमकने लगता है।

वैदिक नारी देवी है। विधाता ने उसे अनेक दिव्यगुण प्रदान किए हैं। वैदिक नारी ने चाँद से सौम्यता और शीतलता प्राप्त की है तो सूर्य के अमित तेज से वह तेजस्विनी भी है। उसके दायित्व गृह तक ही सीमित नहीं है बल्कि समय आने पर वह पराक्रम की देवी बनकर ओजस्वी वाणी में कह उठता है -

अवीरामिव मामयं शरारूरभिमन्यते।

अरे यह घातक मुझे अवीर समझ रहा है? किन्तु मैं तो इस राष्ट्र की ध्वजा हूँ, मैं समाज का सिर हूँ मैं उग्र हूँ, मेरी वाणी में बल है। ऋक् 10/59/2

मम पुत्राः शत्रुहणो अथो मे दुहिता विराट।
उताहमस्मि संजया, पत्यौ मे श्लोक उत्तमः।।

अर्थात् मेरा पुत्र शत्रुहन्ता है, मेरी पुत्री विशेष तेजस्विनी है। मैं भी सदा विजय प्राप्त करने वाली हूँ। वेद कहता है -

अवसृष्टा परापत शरव्ये बह्मसंशिते ।
गच्छामित्रान्प्रपद्यस्व मामीषां कञ्चनोच्छिषः।।

अर्थात् हे नारी तू शत्रुओं पर अपने तीक्ष्ण हथियार फैंक। स्मरण रहे कि एक भी शत्रु बच न पाए।

वेद में नारी को सभी अधिकार प्राप्त है। यज्ञ कर्म करने और करवाने में विदुषीनारी का विशेष रूप से स्मरण किया जाता है।

ऋग्वेद में कहा है - 'सरस्वतीं अध्वरे तायमाने'।

अर्थात् यज्ञकर्म के विस्तार हेतु सरस्वती नारी को पुकारते है। ऋग्वेद 8/31/5,6 में कहा गया है कि जो पति पत्नी समान मन से यज्ञ में सोम रस की आहुति देते है उन्हें अन्न पुत्र, हिरण्य आदि सब कुछ प्राप्त होता है। ऋग्वेद 1/72/5 में कहा गया है कि विद्वान् लोग पत्नी सहित यज्ञ में बैठते है ओर नमस्करणीय को नमस्कार करते है। ऋग्वेद 2/6/5 में कहा गया है कि यदि यज्ञ करती हुई माता के पास घृत लेकर उसकी बहिन भी आ जाती है तो अध्वर्यु ऐसे ही प्रमुदित हो जाता है जैसे वर्षा होने पर जौ की खेती लहलहा उठती है। अथर्ववेद में स्पष्ट कहा गया है - **'सुमंगली उपसीद एनमग्निं संपत्नीं प्रति भूषेह देवान्'।** अर्थात् हे नारी तू सुमंगली है, इस यज्ञाग्नि के पास बैठ। ऋग्वेद 7/34/6 में कहा गया है - **'त्मना समत्सु हिनोत यज्ञं दधात केतुं जनाय वीरम्'।** अर्थात् हे कन्याओ यज्ञ आदि कर्मो को बढ़ाओ। अथर्ववेद 6/122/5 में नारी को इन शब्दों में विभूषित किया गया है - **'शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया'** अर्थात् शुद्ध पवित्र यज्ञ कर्म करने वाली।

वेद में नारी विविधरूपों में अभिव्यक्त हुई है। कहीं वह अध्यापिका है तो कहीं वह राज्य की न्याय व्यवस्था में भी कौशल दिखलाती है। कहीं वह गुप्तचर का कार्य निभाती है तो कहीं अश्वविद्या सिखा कर सबको चमत्कृत कर देती है। कहीं उसे भूगर्भ आदिविद्या सीखने को कहा है तो कहीं उसे कालगणनाका ज्ञान प्राप्त करने का आदेश दिया है। कहीं वह चतुष्कपर्दा अर्थात् पुरुषार्थ चतुष्टय तत्वों का रहस्य समझती है तो कहीं वह सन्यासिनी (सम्पूर्ण सूक्त) बनकर सकल संसार का मार्गदर्शन करती है। ऐसी ही महिमामयी नारी के लिए ऋग्वेद में आह्वान है -

सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीम् अध्वरे तायमाने।
सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्त सरस्वती दाशुषे वार्य दात्।।

अर्थात् हम मनुष्य जन समाज में दिव्य गुण पैदा करने के लिए विदुषी नारी को ही पुकारते हैं। यज्ञ सम्बन्धी कार्यों के लिए भी हम उसी का आह्वान करते हैं। पुण्यकर्म करने हेतु इसी को आमन्त्रित करते है। वही विदुषी सर्वगुणसम्पन्न नारी सकल संसार को वरणीय ऐश्वर्य सुख आदि से भर देती है।

डॉ. प्रतिभा
असिस्टैण्ड प्रोफेसर,
संस्कृत विभागः जम्मू विश्वविद्यालयः जम्मू।

जननी व जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान है!

''देश की बेटियों की रक्षा और उन्नति के लिए प्रधानमंत्री जी श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' नाम से एक योजना का शुभारंभ किया गया है।''

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का अर्थ है-लड़कियों को बचाना और शिक्षित करना इस योजना की शुरूआत भारतीय सरकार द्वारा 2015 के जनवरी माह में हुई।

भारतीय समाज में लड़कियों के प्रति लोगों की मानसिकता बहुत क्रूर और निन्दनीय हो चुकी है। ऐसे लोगों का मानना है कि लड़कियाँ मां-बाप पर और घर पर बोझ होती हैं। शादी से पहले बाप पर बोझ और शादी के बाद पति पर। ये भी एक सच है कि लड़कों के मुकाबले लड़कियों की जनसंख्या भारत में कम है और यह भी सच है कि भारत का आधा अस्तित्व लड़कियों पर निर्भर है। यह जानते हुए भी आज लड़कियों की जनसंख्या कम है। लड़कियों या महिलाओं को कम महत्व देने से धरती पर मानव जीवन खतरे में पड़ सकता है क्योंकि अगर महिला नहीं तो जन्म नहीं। पैदा होने से पहले ही लड़कियों को माँ के गर्भ में ही मार दिया जाता है। यह सोच कर कि लड़कियाँ बोझ होती हैं और लड़का कुल का दीपक लगातार प्रति लड़कों पर गिरती लड़कियों की संख्या एक चिन्ता का विषय है। इसलिये, उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ, छोटी बच्ची की सुरक्षा को पक्का करना, लड़कियों को बचाना, कन्याभ्रूण हत्या रोकने के लिए इस योजना की शुरूआत की गई है। केवल यह घनौनी सोच कि लड़कियाँ पराया धन होती हैं उन्हें मार देना मूर्खता की चिन्ह है। हमें कन्याभ्रूण हत्या को रोकना होगा क्योंकि लड़कियाँ हैं, तो जीवन है।

बेटियाँ देवी का रूप होती हैं। उन्हें दु:ख देने का अधिकार किसी को नहीं है। उन्हें तकलीफ देने का मतलब है देवियों का अपमान करना। कुछ समय पहले सिर्फ लड़कों को ही पढ़ाया जाता था। उस समय लड़कियों का महत्व नहीं था। तब उन्हें पढ़ने का कोई हक नहीं होता था वह सिर्फ घर के काम ही करती थी। परन्तु आज के जमाने की बात करें तो लड़कियाँ भी पढ़ाई की उतनी ही हकदार हैं जितने की लड़के हैं, उन्हें पढ़ने का पूरा हक है। आज भी कुछ ऐसे लोग हैं जो लड़कियों को पढ़ने से रोकते हैं।

लड़कियों का पढ़ा-लिखा होना देश और उनकी सुरक्षा के लिए भी जरूरी है। कहा जाता है कि एक लड़की का पढ़ा-लिखा होना, एक समाज को शिक्षित होना है। एक पढ़ी-लिखी लड़की एक पीढ़ी का भविष्य सुधार सकती है।

लड़कियों को स्वयं के पैरों पे खड़े होने का पूरा हक है। कब तक वे किसी और के सहारे जीवन व्यतीत करेंगी।

''बेटी को मत समझो भार,
वह है जीवन का आधार''

रूपाली समोत्रा
छात्रा एम.एस.सी. बॉटनी
एल.पी.यू., जलंधर (पंजाब)

21 जनवरी 2016 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू की अर्द्धवार्षिक बैठक की गतिविधियाँ

ISSN 2320-2998

CSIR-IIIM

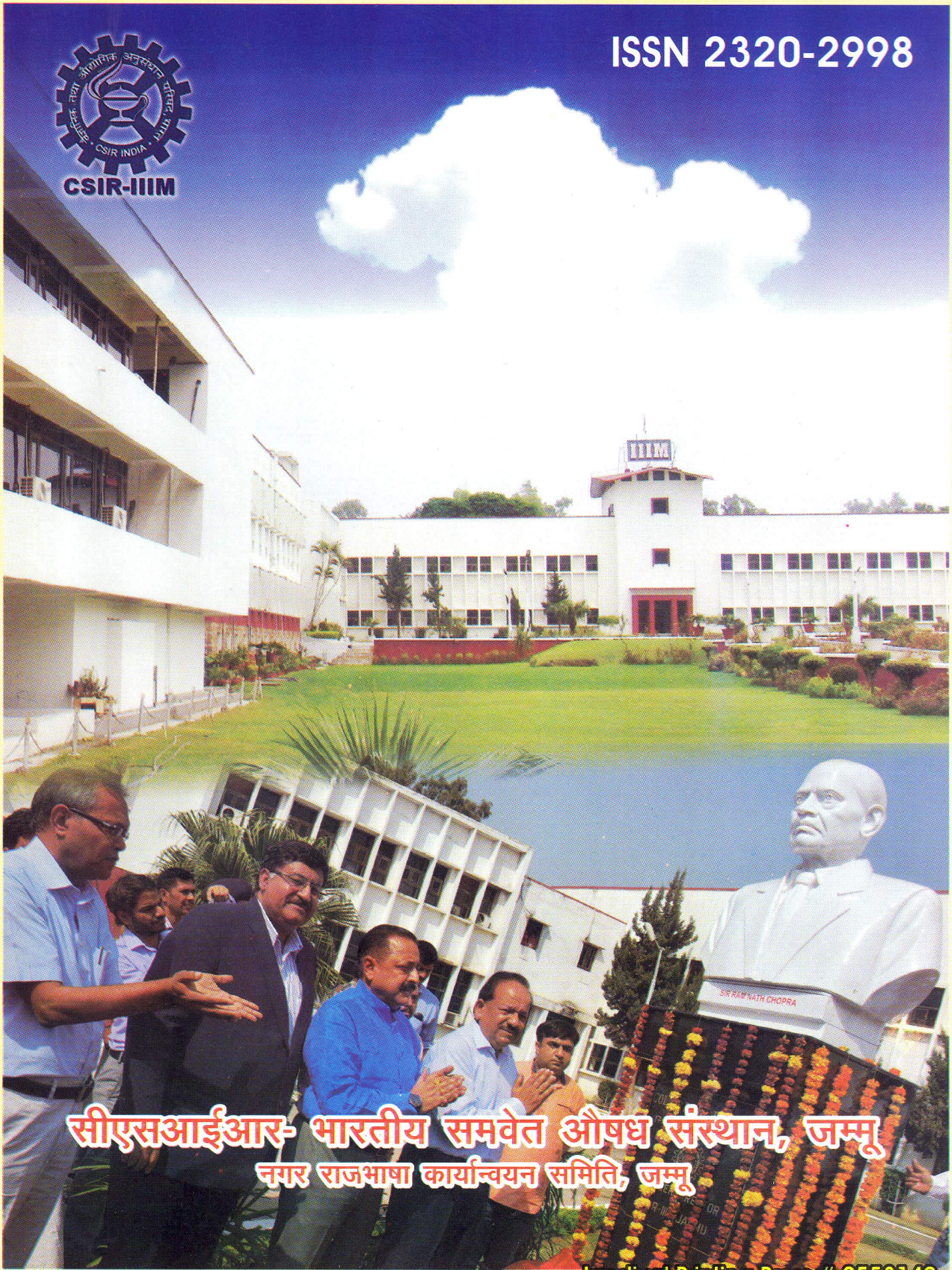

सीएसआईआर- भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

Jandiyal Printing Press # 2553140